

कमोडिटी आउटलुक 2023

'अभृत काल'
में कमोडिटीज के साथ
सर्वोत्तम पोर्टफोलियो



INVESTING IN SILVER THAT HAS BEEN SHAPING HISTORY AND DEFINING FUTURE



Aditya Birla Sun Life Silver ETF

(An open ended exchange traded fund tracking physical price of Silver)

Aditya Birla Sun Life Silver ETF Fund of Fund

(An open ended fund of fund scheme investing in the units of Aditya Birla Sun Life Silver ETF)

Aditya Birla Sun Life Mutual Fund



**ADITYA BIRLA
CAPITAL**

1800-270-7000

Scheme Name	This product is suitable for investors who are seeking*:
Aditya Birla Sun Life Silver ETF (An open ended exchange traded fund tracking physical price of Silver)	<ul style="list-style-type: none"> Investors looking returns that are in line with the performance of silver over the long term, subject to tracking error. Investments in physical silver of 99.9% purity (Invesco). <p>*Investors should consult their financial advisors if in doubt whether the product is suitable for them.</p>



Scheme Name	This product is suitable for investors who are seeking*:
Aditya Birla Sun Life Silver ETF Fund of Fund (An open ended fund of fund scheme investing in the units of Aditya Birla Sun Life Silver ETF)	<ul style="list-style-type: none"> Investors looking returns that are in line with the performance of Aditya Birla Sun Life Silver ETF over the long term. Investments in units of Aditya Birla Sun Life Silver ETF which in turn invests in physical silver of 99.9% purity (Invesco). <p>*Investors should consult their financial advisors if in doubt whether the product is suitable for them.</p>



The investors will bear the recurring expenses of the Fund of Fund (FoF) scheme in addition to the expenses of the underlying schemes in which investments are made by the FoF scheme. For further details, refer SAI/RIM of the scheme.

Mutual fund investments are subject to market risk, read all scheme related documents carefully

Make SMART Goals in Financial Market with Commodity Derivatives Tools



SMART

Simple Financial tools

Means to a better Sharpe ratio

Avenue for Diversification

Reduced Risk

Tangible underlying asset

Options

Futures

Index

Commodity Derivatives market offers you diversified tools to make smart financial decisions

For more details please visit www.ncdex.com / askus@ncdex.com or call 1800 -266 -2339

संपादक की कलम से

अत्यंत हर्ष का विषय है कि यह “वार्षिक कमोडिटी आउटलुक” की 15वीं वर्षगांठ है। संपादकीय टीम की ओर से, मैं वार्षिक कमोडिटी आउटलुक को पसंद करने के लिए पाठकों को धन्यवाद देती हूं। वर्षों से, आपके सहयोग से, पत्रिका ने एक प्रभावशाली मार्ग बनाया है, व्यापक मान्यता प्राप्त की है और पाठकों एवं निवेशकों के बीच पसंदीदा बन गई है। आपके सहयोग और विश्वास ने हमें हमेशा नए विचार के साथ अनें के लिए प्रेरित किया है। आगे बढ़ते हुए, कमोडिटी टीम ने चौबीस घंटे चलने वाले हलचल भरे कमोडिटी बाजार में मजबूती से निवेशकों का हाथ थामे रखा और उनका उचित मार्गदर्शन किया। 15 वर्षों की यात्रा में, इसने सभी उठा-पटक वाले दौर-सबप्राइम संकट से लेकर अर्थिक धीमेपन तक, अमेरिका और चीन व्यापार संघर्ष से लेकर महामारी और रूस एवं यूक्रेन के बीच युद्ध तक कई उत्तर-चढ़ाव-का मुखरता से सामना किया है। इसके अलावा, हम अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने के लिए प्रमुख केंद्रीय बैंकों की नीतिगत कार्रवाइयों की प्रतिक्रियाओं का अनुमान लगाने में सफल हुए हैं।

वर्ष 2022 अभी-अभी समाप्त हुआ है और हम 2023 में प्रवेश कर चुके हैं। बीता हुआ साल कुछ गंभीर ऐतिहासिक घटनाओं का गवाह बना, जिसने पूरी दुनिया और वित्तीय बाजार को अस्त-व्यस्त रखा। कमोडिटीज में भी दबाव महसूस किया गया। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध की शुरुआत के साथ ही पूरी दुनिया में हड़कंप मच गया था क्योंकि ये दोनों देश दुनिया में रोटी की टोकरी के रूप में खिलायत हैं। वे विश्व की कई महत्वपूर्ण वस्तुओं की जरूरतों को पूरा करते हैं। भोजन, धारु, उर्वरक, तेल आदि के अधिकांश की सप्लाई एक साथ युद्ध का मैदान बने इन दोनों देशों से ही होती हैं। कई तरह के प्रतिबंधों के बीच उच्च मांग और रिकॉर्ड आवागमन शुल्क के बीच कई कमोडिटीज की कीमतों में ऐतिहासिक ऊंचाई दर्ज की गई और बढ़ती मुद्रास्फीति ने पूरी दुनिया को अपने चंगुल में ले लिया। मुद्रास्फीति पर कावू पाने के लिए प्रमुख केंद्रीय बैंकों ने व्याज दरों में वृद्धि की... और इस तरह “कम व्याज दर वाले युग” का अंत हो गया है। फेंड ने अपने मुद्रास्फीति के लक्ष्य को 2% वार्षिक की ओर वापस लाने के लिए दरों को मार्च के लगभग शूरू से बढ़ाकर लागभग 4.50% कर दिया। मुद्रास्फीति लागभग 7% तक कम हो गई है। इससे दुनिया का उद्देश्य पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ है क्योंकि इस बार की मुद्रास्फीति केवल अधिक तरलता के कारण नहीं थी बल्कि आपूर्ति की चिंता और प्रतिकूल मौसम के कारण भी थी। व्याज दर में आक्रामक वृद्धि के कारण मंदी की आशंका बढ़ गई और कमोडिटी की कीमतों में भी उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया हुई, और कई वर्षों के उच्च स्तर के बाद दूसरी और तीसरी तिमाही में भारी गिरावट देखी गई। सभी बाधाओं के बीच, 2022 में सीआरबी कुल मिलाकर 17% तक बढ़ गया। चौथी तिमाही में कुछ खुशियां वापस आ गई, डॉलर इंडेक्स में 115 के स्तर से 103 के स्तर तक गिरावट के कारण कुछ कमोडिटीज आकर्षण के केन्द्र में आ गई जबकि अर्थिक आंकड़े कमजोर रहे। चीन में व्यवसायों का फिर से खुलना भी एक आशा की किरण थी। 2022 की तीसरी तिमाही में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में अप्रैल के अब तक के उच्च स्तर से गिरावट हुई है। वर्तमान सीजन के दौरान विश्व स्तर पर तिलहन और खाद्य तेल की अनुमान से अधिक आपूर्ति के कारण भी कीमतों में गिरावट हुई है।

2023 में आगे बढ़ते हुए, आशंका है कि कई प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था मंदी के दौर में प्रवेश कर सकती हैं, और सबसे बड़ा सवाल यह है कि यह मंदी कितनी गंभीर होगी। फेंड कैसे प्रतिक्रिया करेगा और अपनी नीतियों को किस तरह से अनुकूल बनाएगा, यह बहुत महत्वपूर्ण है। मांग को लेकर जोखिम सामने है, और आपूर्ति का जोखिम निश्चित रूप से समाप्त नहीं हुआ है। ऊर्जा बाजार अभी भी जोखिम का प्रमुख स्रोत हैं। अमेरिका में तेल उत्पादन में कटौती और कम रणनीतिक रिजर्व के कारण मांग में बढ़ातेरी शुरू होने के बाद आपूर्ति उसे पकड़ने में असमर्थ होगी। 2021 को याद करें, जब ऐसा हुआ था। बुलियन में 2022 की तरह अचानक उछाल देखा जा सकता है जिसने कम समय में अच्छी बढ़त दर्ज की। कृषि कमोडिटीज चिंता का विषय बनी रहेंगी क्योंकि मक्का, गेहूं आदि के उत्पादन में गिरावट की उम्मीद है। 2023 में मेटल का कारोबार अधिक बेहतर दिख रहा है।

सामान्य तौर पर, कमोडिटीज की कीमतों के पहली छमाही में कम होने की संभावना है, क्योंकि फंडमेंटल कमजोर रह सकते हैं। लेकिन, आपूर्ति की स्थिति में अंतर और मांग में नरमी के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अलग-अलग कमोडिटीज में अलग-अलग रुझान देखा गया है। व्याज दर वृद्धि में कुछ ठहराव की उम्मीद के साथ मांग में बढ़ातेरी होनी चाहिए। इसके अलावा, कमोडिटी दिग्गज चीन सिर्फ़ फिर से उभरने की योजना बना रहा है और दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था को फिर से खोल रहा है, जिससे उम्मीद है कि पश्चिम में धीमेपन और मंदी से मांग में संभावित कमी की भरपायी चीन में मांग के बढ़ने से हो जाएगी। अमेरिका और अन्य देशों में मुद्रास्फीति कम हो रही है लेकिन यूरोपीय संघ में यह धीरे-धीरे कम होगी क्योंकि यह आपूर्ति की कमी के जोखिम पर अधिक निर्भर है। इसके लिए यूरोपीय देशों में नेचुरल गैस की कीमतों को देख सकते हैं। जहां तक वृद्धि का संबंध है, तो बढ़ती व्याज दरों की गति के साथ मंदी के गहराने की आशंका से संशोधित करके कम कर दिया गया है। वैश्विक वृद्धि 2.7% रहने की उम्मीद है जबकि भारत निश्चित रूप से अपेक्षाकृत अच्छा कर रहा है, और 6% की वृद्धि की उम्मीद कर रहा है। निर्यात आंकड़े और वैश्विक व्यापार आंकड़े प्रभावशाली हैं। यहां तक कि भारतीय कमोडिटी डिविडेंट मार्केट में भी 2022 में उछाल देखा गया है। अत्यंत उठापटक वाले कारोबारी वातावरण में ऑप्शंस के प्रति आकर्षण में बढ़ातेरी हुई और यह अब कारोबारियों का पसंदीदा बन गया है।

निष्कर्षतः हमारा मानना है कि 2023 की पहली छमाही में कमोडिटीज में कुछ गिरावट की उम्मीद है। लेकिन, जैसे-जैसे हम वर्ष की दूसरी छमाही की ओर बढ़ें, और जब मांग को लेकर सबसे अधिक चिंताएं एक बार खत्म हो जाती हैं, तो आपूर्ति संबंधी चिंताएं एक बार फिर से केंद्र में आ सकती हैं, जिससे कीमतों में बढ़ातेरी होनी चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर निचले स्तर से उछाल की उम्मीद है।

!!! निवेश के लिए हार्दिक शुभकामनाएं !!!



श्रीमती वंदना भारती

संपादक
वार्षिकांक कमोडिटी आउटलुक
एकोपी-कमोडिटीज

वंदना भारती

वंदना भारती

डॉयरेक्टर अभियान



श्री डी. के. अग्रवाल

चेयरमैन एवं मैनेजिंग डॉयरेक्टर
(एसएमसी कैपिटल्स लि.)

2022 के उत्तर-चढ़ाव के बाद, 2023 में कमोडिटी बाजार के बारे में आपका वृद्धिकोण क्या है?

बीता हुआ वर्ष कमोडिटी बाजारों के लिए एक असाधारण वर्ष था। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध के कारण आपूर्ति को लेकर जोखिमों से अस्थिरता में वृद्धि हुई और कई कमोडिटीज की कीमतों में रिकॉर्ड बढ़ोतारी हुई है। हम जानते हैं कि दुनिया भर में दशक की उच्च मुद्रास्फीति ने केंद्रीय बैंकों के साथ-साथ उपभोक्ताओं को भी परेशान कर दिया है। मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लिए, केंद्रीय बैंकों ने व्याज दर बढ़ानी शुरू कर दी। व्याज दर में रिकॉर्ड बढ़ोतारी और चीन में मंदी के कारण कमोडिटीज की कीमतों में गिरावट हुई। 2023 की पहली छमाही में कमोडिटी की कीमतें कम होने की उम्मीद है, ब्यांकिंग फंड्सेंटल रिकैलब्रेशन की ओर बढ़ रहा है। लेकिन, 2023 फिर से बहुत अधिक अस्थिरता के साथ अनिश्चितता वाला वर्ष होने वाला है। मेरा मानना है कि एक संक्षिप्त मंदी के बाद, 2023 में मांग वापस आ जाएगी। इसके अलावा, चीन की अर्थव्यवस्था के फिर से खुलने के बीच व्याज दरों में बढ़ोतारी पर रोक लगने की उम्मीद है, जिससे बाद में कमोडिटीज की मांग बढ़ सकती है।

मुद्रास्फीति और व्याज दर के परिवृश्य पर आपके क्या विचार हैं?

वर्ष 2022 के दौरान, हमने प्रमुख केंद्रीय बैंकों के प्रतिमानों में बदलाव देखा। महंगाई से मुकाबला उनकी स्वैच्छक प्राथमिकता थी। वैश्विक केंद्रीय बैंकों ने एक नई वास्तविकता को स्वीकार किया है और वे मुद्रास्फीति से लड़ने और इसे नियंत्रण में लाने के लिए व्याज दरों में वृद्धि जारी रखे हुए हैं, और कम व्याज दरों के युग को अलविदा कह रहे हैं। केंद्र बहुत आक्रामक रहा है और यहां तक कि अन्य प्रमुख केंद्रीय बैंक भी पीछे नहीं थे। वास्तव में इस मोड़ पर, कुछ मौसम संबंधी कारकों के बीच आपूर्ति की समस्या के कारण भी मुद्रास्फीति अधिक बनी हुई है। कुछ समय तक महंगाई की मार बनी रहेगी। ऐसा माना जाता है कि अमेरिका में, मुद्रास्फीति में कमी होने की संभावना है, लेकिन यूरोप में, इसे कम करने में समय लगेगा क्योंकि यूरोप में आपूर्ति को लेकर जोखिम अधिक है और युद्ध अभी भी जारी है। जैसा कि अनुमान है, मुद्रास्फीति में गिरावट से अर्थिक विकास के

साथ-साथ व्याज दर में कमी हो सकती है। अगर मुद्रास्फीति कई केंद्रीय बैंकों द्वारा निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचती है तो हम 2023 की तीसरी या चौथी तिमाही में दरों में कटौती देख सकते हैं।

कमोडिटी बाजार में ऑप्शन कैसे निर्णायक भूमिका निभा रहा है?

हमने 2022 में ऑप्शन कारोबार में अविश्वसनीय प्रतिक्रिया देखी है। बाजार में अधिक अस्थिरता के कारण वॉल्यूम में रिकॉर्ड बढ़ोतारी हुई है और हम जानते हैं कि जब अस्थिरता बहुत अधिक होती है तो व्यापारियों और निवेशकों के लिए ऑप्शन बहुत लोकप्रिय उपकरण है। नेचुरल गैस, कच्चे तेल और सोने के ऑप्शन में रिकॉर्ड वॉल्यूम देखा गया है और ऑप्शन एवं पूरे कमोडिटी बाजार के टर्नओवर में रिकॉर्ड वृद्धि हुई। यह संख्या स्वयं कमोडिटीज में बढ़ती भागीदारी को दर्शा रही है। दुर्भाग्य से चना, सोयाबीन, कच्चे पांप तेल और सरसों जैसी कुछ महत्वपूर्ण कमोडिटीज पर अभी भी प्रतिबंध लगा हुआ है। यदि ये कमोडिटीज कारोबारियों के लिए उपलब्ध होतीं तो भागीदारी काफी बेहतर हो सकती थी। हमें अधिक कमोडिटीज में अधिक ऑप्शन कॉन्ट्रैक्टों की आवश्यकता है। ऐसा लगता है कि बाजार मिनी कॉन्ट्रैक्टों(ऑप्शंस) में भी दिलचस्पी लेता है क्योंकि यह भुगतान किए गए कुछ प्रीमियम को कम करता है और कमोडिटी व्यापार को सुविधाजनक बनाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर आपकी क्या राय है क्योंकि यह विश्व स्तर पर केंद्र में आ रही है?

हम सबसे मजबूत दौर से गुजर रहे हैं जहां दुनिया भारत की ओर देख रही है। भारत का विकास दर 6% बढ़ने की उम्मीद है। यह संख्या तब प्रभावशाली दिखती है जब अधिकांश प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ मंदी या मंदी के दबाव से जूझ रही हैं। सौभाग्य से, भारत में मंदी की ऐसी कोई संभावना नहीं है। भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि बरकरार है। निस्संदेह, मौद्रिक संख्या ने मांग पर दबाव डाला लेकिन उम्मीद है कि हम कुछ और महीनों में मुद्रास्फीति में गिरावट देख सकते हैं। इससे उम्मीद जगी है कि केंद्रीय बैंक अपनी व्याज दर संबंधी नितिगत कार्रवाइयों को रोक सकते हैं, इस प्रकार अर्थव्यवस्था को बहुत आवश्यक समर्थन मिल सकेगा। अब तक, अन्य बाजारों की तुलना में भारतीय अर्थव्यवस्था और बाजारों का प्रदर्शन सराहनीय रहा है। यह दृढ़ विश्वास है कि कारोबारी गतिविधियों में वृद्धि होगी और नए व्यापारिक संबंध वैश्विक व्यापार में भारत की भागीदारी को बढ़ाएंगे।

अंत में, कमोडिटी रिसर्च टीम के लिए आपका क्या संदेश है?

एसएमसी कमोडिटी टीम काफी प्रशंसनीय काम कर रही है। ऐसी अस्थिरता वाले बाजार में, टीम द्वारा उचित शोध और मार्गदर्शन के साथ, कारोबारी शानदार मुनाफा अर्जित करने में सक्षम होते हैं। कारोबार में कड़े अनुशासन के साथ-साथ उचित समय पर प्रवेश और निकास के लिए गहन शोध और समय पर मार्गदर्शन बहुत महत्वपूर्ण है। “वार्षिक कमोडिटी आउटलुक” के 15वें संस्करण के लिए टीम को मेरी ओर से हार्दिक बधाई। यह हमारे निवेशकों को जानकारी प्रदान करने के लिए एक व्यावाहारिक, विचारोत्तेजक, सम्मोहक और गहन विश्लेषण का प्रयास है। इसकी पहुँच व्यापक है और यह निवेशकों और व्यापारिक समुदाय के बीच इस पत्रिका की सबसे अधिक मांग है। इस पत्रिका की खबरी यह है कि यह हिन्दी पाठकों के लिए हिन्दी संस्करण में भी आती है। मैं एक बार फिर इस मुद्रे को सामने लाने के लिए टीम को बधाई देता हूँ। कड़ी मेहनत करते रहें और पाठकों की बेहतरीन तरीके से सेवा करने के नए अवसर लेकर आएं।

“

हम सबसे मजबूत दौर से गुजर रहे हैं जहां दुनिया भारत की ओर देख रही है। भारत का विकास दर 6% बढ़ने की उम्मीद है। यह संख्या तब प्रभावशाली दिखती है जब अधिकांश प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ मंदी या मंदी के दबाव से जूझ रही हैं।

यह संख्या तब प्रभावशाली दिखती है जब अधिकांश प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ मंदी या मंदी के दबाव से जूझ रही हैं।

”

अनुभव से अनुशंसा तक



मैं 'वार्षिक कमोडिटी आउटलुक' पत्रिका के 15वें संस्करण के शुभारंभ के लिए एसएमसी ग्लोबल सिक्योरिटीज लिमिटेड को बधाई देता हूँ। कमोडिटीज किसी भी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, कमोडिटी डेरिवेटिव बाजार मूल्य जेखियम प्रबंधन और बेहतर मूल्य की प्राप्ति के लिए एक प्रभावी मंच के रूप में काम करते हैं। यह एसेट समूह एक वैकल्पिक सेगमेंट के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है जो बाजार के सहभागियों को उनके पोर्टफोलियो में विविधता लाने में सहायता करता है। एसएमसी की 'वार्षिक कमोडिटी आउटलुक' पत्रिका कमोडिटी स्पेस में निवेशकों और व्यापारियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशनों में से एक रही है, जो पिछले वर्ष के दौरान विभिन्न कमोडिटीज के प्रदर्शन, अगले वर्ष उनकी संभावनाओं और भारतीय अर्थव्यवस्था पर उनके संभावित प्रभाव पर एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। मैं एसएमसी को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

श्री अरुण रस्ते | एमडी और सीईओ, एनसीडीईएस।

मुझे कमोडिटी रिसर्च टीम और सभी सदस्यों को बधाई देते हुए बहुत खुशी हो रही है, जिहोने वार्षिक कमोडिटी आउटलुक को एक शानदार सफलता दिलाने में योगदान दिया है। यह अंक वास्तव में हमारे लिए विशेष है क्योंकि यह 15वां संस्करण है, जो समय के साथ बेहतर और सटीक हो रहा है। मुझे अभी भी याद है कि एसएमसी ग्लोबल सिक्योरिटीज ब्रॉकिंग उद्योग में हिंदी और अंग्रेजी दोनों में वार्षिक कमोडिटी आउटलुक शुरू करने के अभिनव विचार के साथ सबसे पहले आई थी। बाद में कई लोगों ने इसका अनुगमन किया। मैं एक बार फिर टीम को बधाई देता हूँ और अधिक से अधिक सफलता एवं नयी ऊंचाई की कामना करता हूँ। नई अवधारणाओं और विचारों के साथ आइए और इस पत्रिका में मूल्यवर्धन करते रहिए।

श्री सुभाष सी. अग्रवाल

चेयरमैन एवं मैनेजिंग डॉयरेक्टर
एसएमसी ग्रुप



भारतीय कमोडिटी बाजारों को समर्पित एक वार्षिक प्रकाशन के साथ आने के लिए टीम एसएमसी को मेरी हार्दिक बधाई। समग्र रूप से यह पत्रिका शानदार दिखती है और इसमें निवेशकों को पूरी जानकारी के साथ निर्णय लेने में मदद करने के लिए आकर्षक लेख शामिल हैं। यह पत्रिका प्रमुख कमोडिटीज पर मौलिक और तकनीकी दृष्टिकोण का प्रभावशाली संयोजन है और घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार के तथ्यों और परिदृश्यों को भी शामिल किया गया है। यह कमोडिटी निवेशकों और व्यापारियों के बीच सबसे अधिक पसंद की जाने वाली पत्रिकाओं में से एक है। बाजार के मौजूदा उठापटक वाले परिदृश्य में, मुझे आशा है कि शोध दल उपयुक्त रणनीति के साथ आएगा, जो कारोबारियों को बाजार में होने वाले संभावित तेज बदलाव से निपटने के लिए मार्गदर्शन करेगा ताकि वे कमाई में अंतर आ सकें।

श्री महेश सी. गुप्ता

वाइस चेयरमैन एवं मैनेजिंग डॉयरेक्टर
एसएमसी ग्रुप



"वार्षिक कमोडिटी आउटलुक 2023" के 15वें संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर, मैं टीम से जुड़े प्रत्येक सदस्य को उनके अथक प्रयास के लिए बधाई देना चाहता हूँ। कमोडिटी भारत में एक आगामी परिसंपत्ति वर्ग है और निश्चित रूप से यह पत्रिका निवेशकों को पूरी जानकारी सहित निर्णय लेने में मदद करेगी। कारोबारियों को सर्वोत्तम संभव तरीके से सेवा देने के लिए समय-समय पर भारतीय कमोडिटी एक्सचेंज नए नए उत्पादों के साथ आ रहे हैं। मैं एक बार फिर टीम को धन्यवाद देना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि वे इस पत्रिका में अपने अभिनव विचारों को रखना जारी रखेंगे। प्रशस्त मार्ग पर अग्रसर रहें।

श्री अनुराग बंसल

पूर्णकालिक डॉयरेक्टर, एसएमसी ग्लोबल सिक्योरिटीज लि.

अनुभव से अनुशंसा तक

“

श्री निलेश शाह

गृष्म प्रेरित एवं मैनेजिंग डॉयरेक्टर, कोटक म्यूचुअल फंड

“भारतीय सदियों से कमोडिटीज में निवेश कर रहे हैं, खासकर सोने और चांदी में। इनमें निवेश करने का फैसला जानकारी से ज्यादा भावनात्मक रहा है। कमोडिटीज की लोकप्रियता बढ़ रही है क्योंकि ईटीएफ और ईटीसीडी जैसे सुविधाजनक साधनों के बारे में अधिक जागरूकता बढ़ रही है। ऐसी बहुत कम पत्रिकाएँ हैं, जो विशेष रूप से कमोडिटीज के लिए समर्पित हैं, जो किसी के ज्ञान को विस्तार से बढ़ाने में मदद कर सकती हैं। एसएमसी का कमोडिटी आउटलुक 2023 सरल भाषा में आंकड़ा और सामग्री के मामले में व्यापक है। इसके अलावा, पत्रिका हिंदी में भी प्रकाशित होती है जिससे अधिक पहुंच संभव होगी।”



“

श्री सुनील सुब्रमण्यम

मैनेजिंग डॉयरेक्टर
सुंदरम एसेट मैनेजमेंट कंपनी



एसएमसी पत्रिका कमोडिटी आउटलुक कमोडिटी क्षेत्र में जानकारी का एक भंडार है, और पिछले 15 वर्षों में वे जिस सामग्री को अथक रूप से सामने ला रहे हैं, उसे देखकर अपने पाठकों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सराहनीय है। मैं उन्हें इस मील के पथर पर बधाई देना चाहता हूं, और मैं उनसे और अच्छे काम की आशा करता हूं।

“

“

श्री अमर शाह

चीफ बीजनेस ऑफिसर, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एएमसी।

भारतीय कमोडिटी बाजारों को समर्पित एक वार्षिक प्रकाशन के साथ आने और 15 गौरवशाली वर्षों की विरासत को सफलतापूर्वक संजोने के लिए टीम एसएमसी को हार्दिक बधाई। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एसेट मैनेजमेंट की ओर से हम कामना करते हैं कि आपकी वित्तीय बाजार विशेषज्ञता से निवेशकों को लाभ उठाने के लिए मदद करने में आपको कई दशकों तक सफलता मिले।



“

श्री सौगता चटर्जी

को-चीफ बीजनेस ऑफिसर,
निप्पां इंडिया म्यूचुअल फंड



‘वार्षिक कमोडिटी आउटलुक’ अंक के 15वें संस्करण को प्रकाशित करने पर एसएमसी को बधाई। कमोडिटी बाजार की जटिल दुनिया में, गुणवत्ता सामग्री के साथ निवेशक को जानकारी, जिसे समझना आसान नहीं है, खोजना मुश्किल है लेकिन यहां, डॉ. डी के अग्रवाल के नेतृत्व में टीम एसएमसी ने प्रभावशाली काम किया है, इसके लिए टीम एसएमसी का विजन प्रशंसनीय है।

“

“

मैं ‘वार्षिक कमोडिटी आउटलुक’ पत्रिका के 15 वर्ष सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए एसएमसी ग्लोबल सिक्योरिटीज लिमिटेड को बधाई देता हूं। कमोडिटीज और स्टॉक दो अलग-अलग एसेट समूह हैं और प्रत्येक की अपनी विशेषताएँ हैं। कमोडिटी निवेश पोर्टफोलियो का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये बाजार किसी भी पैसे का निवेश करने से पहले कैसे काम करते हैं। एसएमसी की वार्षिक कमोडिटी आउटलुक पत्रिका कमोडिटी क्षेत्र में निवेशकों और व्यापारियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशनों में से एक रही है, जो पिछले वर्ष के दौरान विभिन्न कमोडिटीज के प्रदर्शन, अगले वर्ष उनकी संभावनाओं और भारतीय अर्थव्यवस्था पर उनके संभावित प्रभाव पर एक अंतर्रूप्ति प्रदान करती है। मैं एसएमसी को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएँ देता हूं।



श्री भवदीप भट्टू (हेड, रिटेल सेल्स- आदित्य बिड़ला सन लाइफ एएमसी लिमिटेड)

“



(बाएं से दाएं) श्री अजय गर्ग (डॉयरेक्टर एवं सीईओ-एसएमसी ग्लोबल सिक्योरिटीज लि.)
श्री डी के अग्रवाल (चेयरमैन एवं मैनेजिंग डॉयरेक्टर-एसएमसी कैपिटल्स लि.) वंदना भारती (एवीपी कमोडिटी)
के साथ एसएमसी कमोडिटी टीम (बाएं से दाएं) रविन्द्र कुमार, दिलीप नाथ, सोनिया बाब्बा, रविशंकर पाण्डेय, शिवानन्द उपाध्याय
और चंचल चौहान-क्रिएटिव ग्राफिक डिजाइनर

Refer & Win!

Refer a friend and win exciting prizes



Steps:

1. Scan the QR Code
2. Enter yours and your friend's details
3. Your friend opens an A/c with SMC
4. Win Exciting Prizes



Broking - Equity, Commodity & Currency | Wealth Management | Insurance Broking | Real Estate Advisory
 Mortgage Advisory | Distribution of IPOs, Mutual Funds, FDs & Bonds | Investment Banking
 NBFC Financing | PMS | Institutional Broking | Clearing Services | NRI & FPI Services | Research

Visit www.smctradeonline.com

DELHI | MUMBAI | KOLKATA | AHMEDABAD | CHENNAI | BENGALURU | DUBAI

SMC Global Securities Ltd., CIN No.:L74899DL1994PLC063609, Registered Office: 11/6-B, Shanti Chamber, Pusa Road, New Delhi 110005 | Tel: +91-11-30111000 | Ext. 8710, 8705

SEBI Reg. No. IN2000199438, Member: NSE (07714), BSE (470), MSEI (1002), MCX (8200) & NCDEX (00021). DP SEBI Regn. No. CDSL/NSQDIN-DF-130-2015. Mutual Funds Distributor ARN No. 29345. SMC Investments and Advisors Limited, SEBI PMS Regn. No. INP00003435. SMC Insurance Brokers Pvt. Ltd. IRDAI Regn. No: DB272/04 License No. 289. Valid upto 27/01/2023.

Disclaimer: Investments in securities market are subject to market risks; read all the related documents carefully before investing. PMS is not offered in commodity derivative segment. Insurance is the subject matter of solicitation.

वार्षिकांक 2022 का प्रदर्शन एवं घटनाक्रम 2023

वार्षिकांक 2022 में दिया गया कीमत-दायरा और प्रदर्शन

कमोडिटी	दायरा (वार्षिकांक 2022)	2022 उच्च स्तर	2022 निम्न स्तर
सोना (COMEX)	1650-2080	2078.80	1613.00
सोना (MCX)	40000-56000	55558.00	47300.00
चाँदी (COMEX)	18.500-34.500	27.35	17.34
चाँदी (MCX)	54000-78000	73078.00	51857.00
कच्चा तेल (NYMEX)	42.00-95.00	130.50	70.08
कच्चा तेल (MCX)	3200-7000	9996.00	5544.00
नेचुरल गैस (NYMEX)	2.400-6.350	10.03	3.64
नेचुरल गैस (MCX)	160-480	801.00	272.70
एल्युमीनियम (MCX)	180-300	325.40	186.75
एल्युमीनियम (LME)	2330-3260	3966.00	2103.00
तांबा (MCX)	490-980	886.00	601.00
तांबा (LME)	8370-10800	10719.00	7005.00
लेड (MCX)	145-225	198.00	166.00
लेड (LME)	1640-2880	2533.00	1767.00
जिंक (MCX)	185-360	383.40	248.30
जिंक (LME)	2600-3980	4458.00	2714.00
जीरा	13700-21400	31645.00	16385.00
हल्दी	5800-12000	11148.00	6688.00
धनिया	6000-14000	13298.00	7760.00
कॉटन (ICE)	85-145	155.95	70.21
ग्वारसीड	4550-8500	6725.00	4517.00
ग्वारगम	7800-16000	13385.00	8229.00
अरंडी	5100-8000	7724.00	5822.00
मेंथाओर्जल	900-1300	1152.00	938.00

* 16 दिसम्बर 2022 तक वंश भाव

स्रोत: SMC रिसर्च

2023 में FOMC और ECB की बैठक

माह	FOMC की बैठक	ECB की बैठक
जनवरी	31	-
फरवरी	1	2
मार्च	21-22	16
अप्रैल	-	-
मई	02-03	4
जून	13-14	15
जुलाई	25-26	27
अगस्त	-	-
सितम्बर	19-20	14
अक्टूबर	31	26
नवम्बर	1	-
दिसम्बर	13	14

स्रोत: FOMC और ECB

सोना होल्डिंग वाले 10 प्रमुख देश

देश	टन	रिजर्व में (%)
1 अमेरिका	8,133.5	65.9%
2 जर्मनी	3,355.1	64.9%
3 इटली	2,451.8	62.2%
4 फ्रांस	2,436.8	57.0%
5 रूस	2,298.5	19.6%
6 चीन	1,948.3	3.2%
7 स्विटजरलैंड	1,040.0	6.2%
8 जापान	846.0	3.7%
9 भारत	786.3	7.7%
10 नीदरलैंड	612.5	55.0%

स्रोत: WGC (मासिक सेन्ट्रल बैंक सांख्यिकी, दिसम्बर 2022)

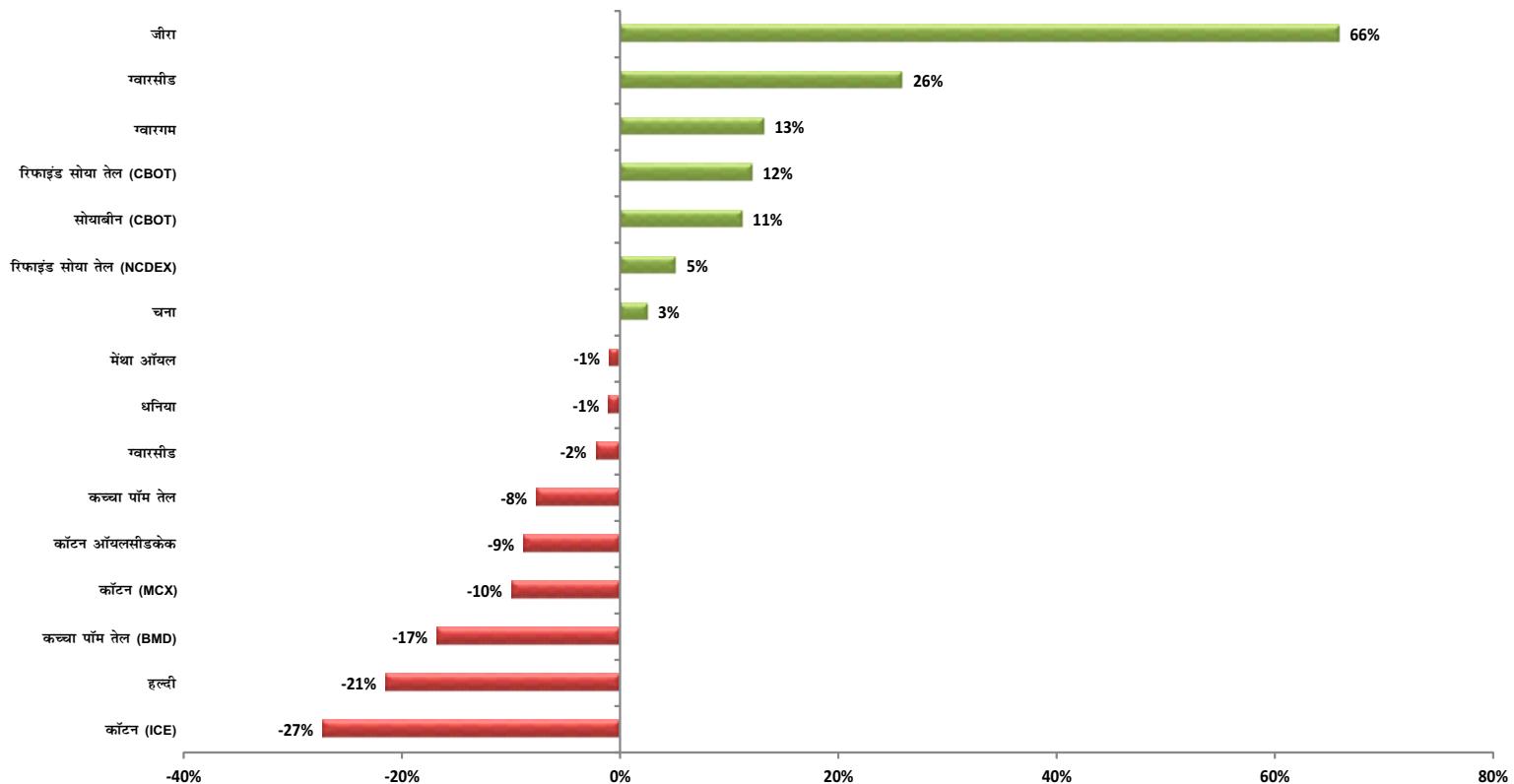
विश्व के प्रमुख सेंट्रल बैंकों की ब्याज दर

सेंट्रल बैंक	वर्तमान ब्याज दरें	पिछला बदलाव	बदलाव की तिथि
रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI)	6.25%	225 बेसिस प्वाइंट	07-दिसम्बर-22
बैंक ऑफ इंग्लैंड (BOE)	3.50%	325 बेसिस प्वाइंट	15-दिसम्बर-22
यूरोपीयन सेन्ट्रल बैंक (ECB)	2.00%	200 बेसिस प्वाइंट	02-नवम्बर-22
फेडरल रिजर्व (FED)	4.50%	425 बेसिस प्वाइंट	14-दिसम्बर-22
रिजर्व बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया (RBA)	3.10%	300 बेसिस प्वाइंट	07-दिसम्बर-22
बैंक ऑफ जापान (BOJ)	-0.10%	(-20 बेसिस प्वाइंट)	29-जनवरी-16
सेंट्रल बैंक ऑफ रसियन फेडरेशन (CBR)	7.50%	(-100 बेसिस प्वाइंट)	16-दिसम्बर-22
पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना (PBOC)	3.65%	(-70 बेसिस प्वाइंट)	22-अगस्त-22
ब्राजील सेन्ट्रल बैंक (BACEN)	13.75%	450 बेसिस प्वाइंट	21-सितम्बर-22

स्रोत: Investing.com

कमोडिटी का प्रदर्शन 2022

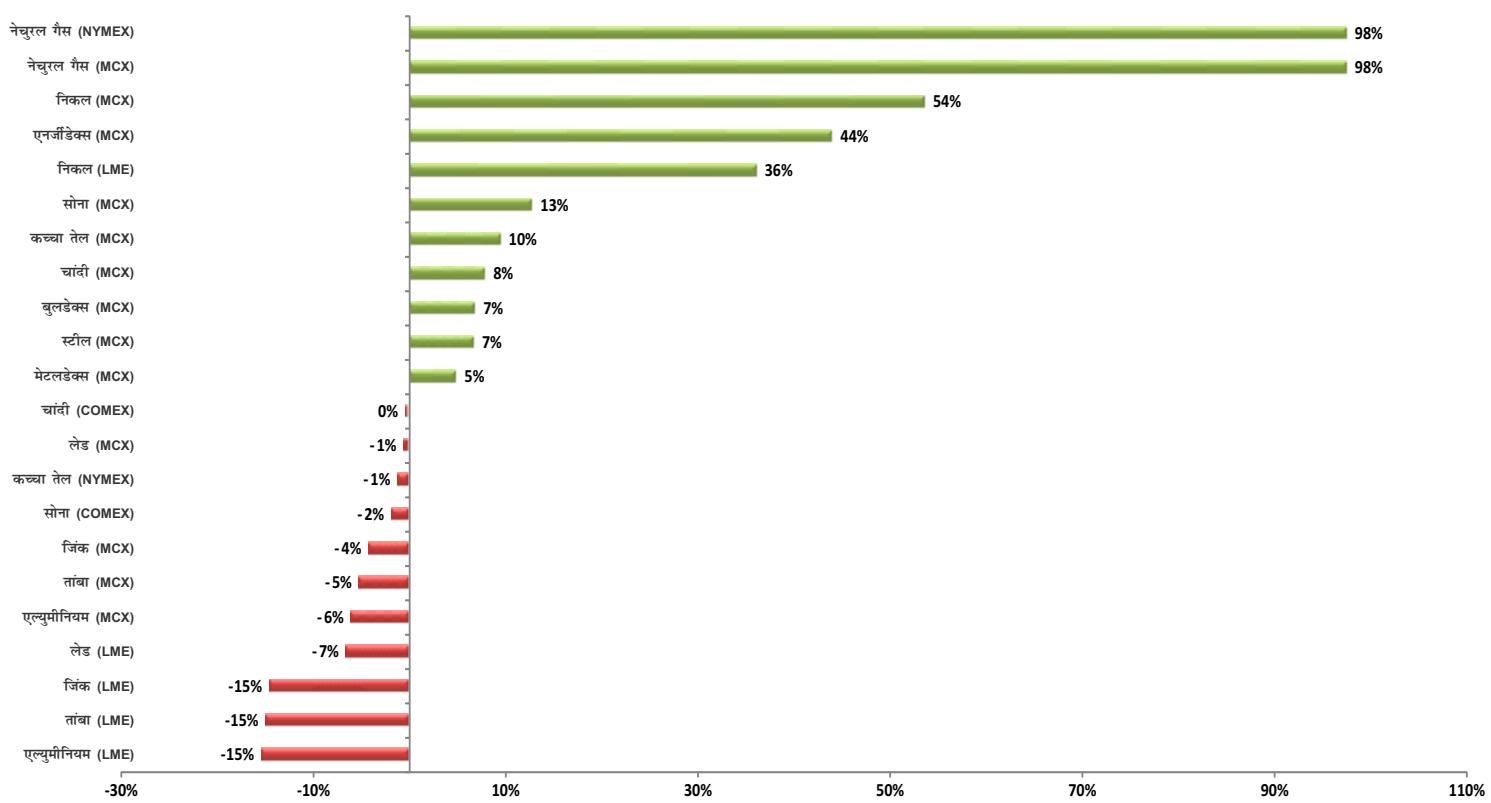
कृषि कमोडिटी कारोबार में बदलाव 2022



* 16 दिसम्बर 2022 तक बंद भाव

स्रोत: सेंयटर एवं SMC रिसर्च

सराफा, मेटल और एनर्जी कारोबार में बदलाव 2022



* 16 दिसम्बर 2022 तक बंद भाव

स्रोत: सेंयटर एवं SMC रिसर्च

कीमतों में बदलाव का दायरा

कमोडिटी कीमतों में बदलाव का दायरा (कृषि कमोडिटी)

कमोडिटी	अब तक का उच्चतम स्तर	अब तक का निचला स्तर	2022 उच्चतम स्तर*	2022 निचला स्तर*
मसाले				
जीरा	31645.00	4877.40	31645.00	16385.00
हल्दी	16350.00	1666.00	11148.00	6638.00
धनिया	13444.00	2570.00	13298.00	7760.00
अन्य कमोडिटी				
कॉटन (ICE)	227.00	28.20	158.02	70.21
ग्वारसीड	7185.00	2912.00	6725.00	4517.00
ग्वारगम	95920.00	3262.00	13385.00	8199.00
मेंथा तेल (MCX)	2564.80	342.00	1152.00	938.00
तिलहन				
कैस्टरसीड	7724.00	268.60	7724.00	5822.00
क्रूड पाम ऑयल (BMD)	7268.00	424.00	7268.00	3220.00
सोयाबीन (CBOT)	1789.00	470.00	1759.00	1305.00
रिफाइंड सोयातेल (CBOT)	83.00	10.00	83.00	55.00

*16 दिसम्बर 2022 तक बंद भाव

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

कमोडिटी कीमतों में बदलाव का दायरा (सराफा, मेटल और एनर्जी)

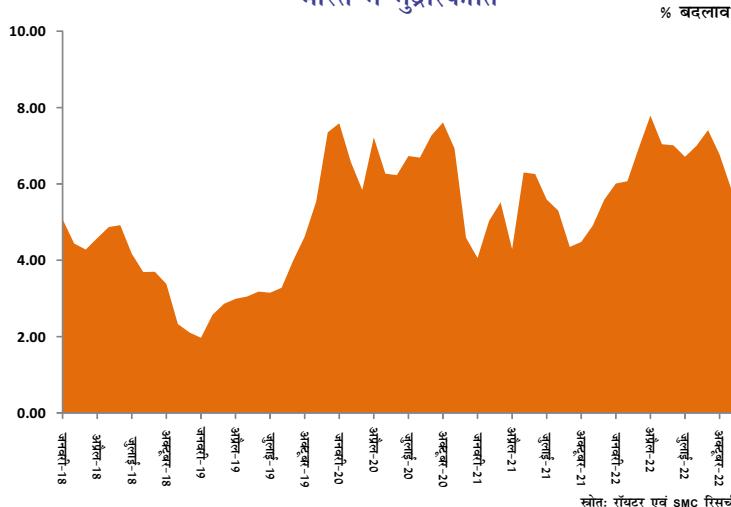
कमोडिटी	एक्सचेंज	अब तक का उच्चतम स्तर	अब तक का निचला स्तर	2022 उच्चतम स्तर*	2022 निचला स्तर*
सोना	COMEX	2078.80	191.90	2078.80	1613.00
सोना	MCX	56191.00	5600.00	55558.00	47300.00
चांदी	COMEX	49.82	0.07	27.35	17.34
चांदी	MCX	77949.00	7551.00	73078.00	51857.00
कच्चा तेल	NYMEX	147.27	-40.32	130.50	70.08
कच्चा तेल	MCX	9684.00	1.00	9996.00	5544.00
नेचुरल गैस	NYMEX	15.78	1.04	10.03	3.64
नेचुरल गैस	MCX	801.00	99.50	801.00	272.70
एल्युमीनियम	MCX	325.40	67.30	325.40	186.75
तांबा	MCX	886.00	124.10	886.00	601.00
लेड	MCX	198.00	42.70	198.00	166.00
जिंक	MCX	383.40	52.60	383.40	248.30

*16 दिसम्बर 2022 तक बंद भाव

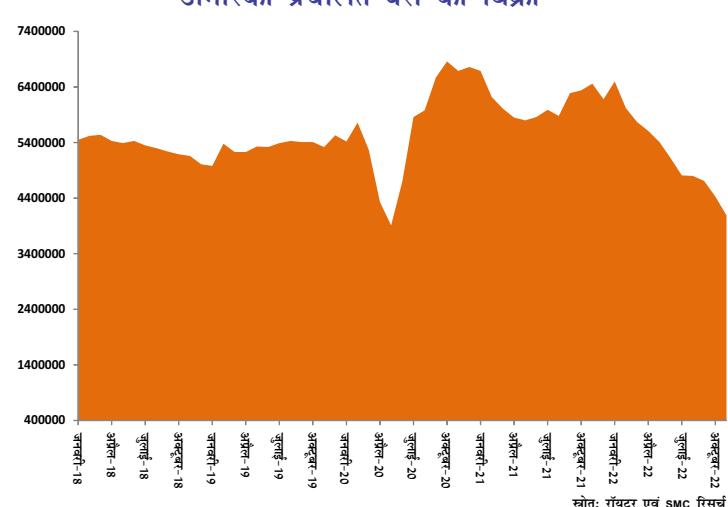
स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

आर्थिक इंडिकेटर

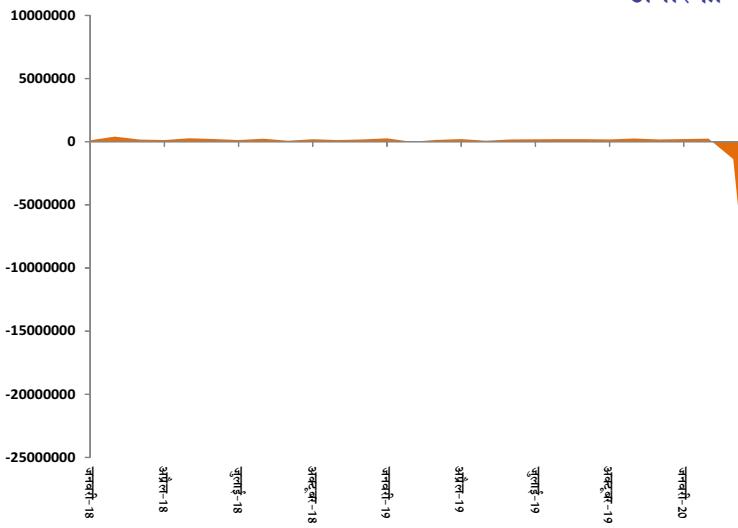
भारत में मुद्रास्फीति



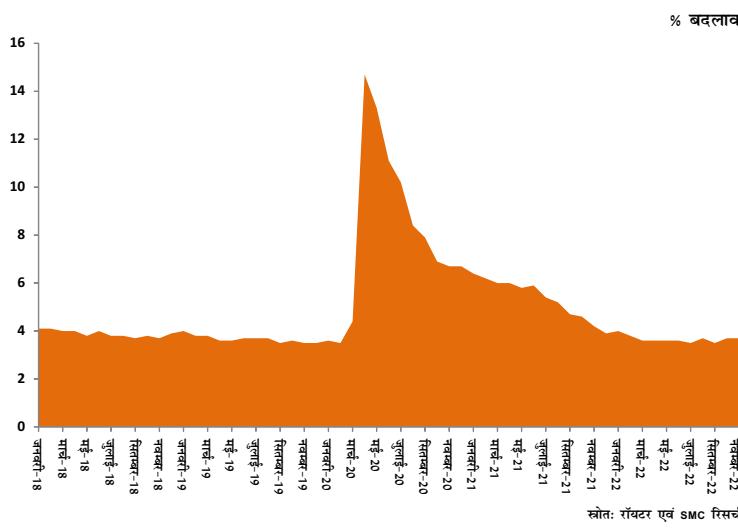
अमेरिकी प्रचलित घरों की बिक्री



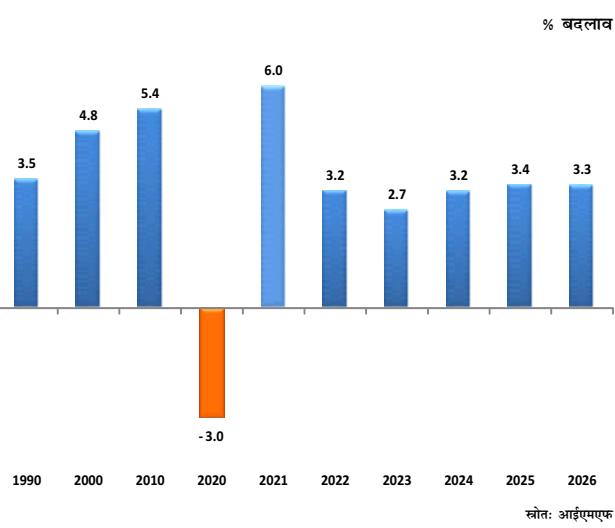
अमेरिकी गैर कृषि पेरोल



अमेरिकी बेरोजगारी दर

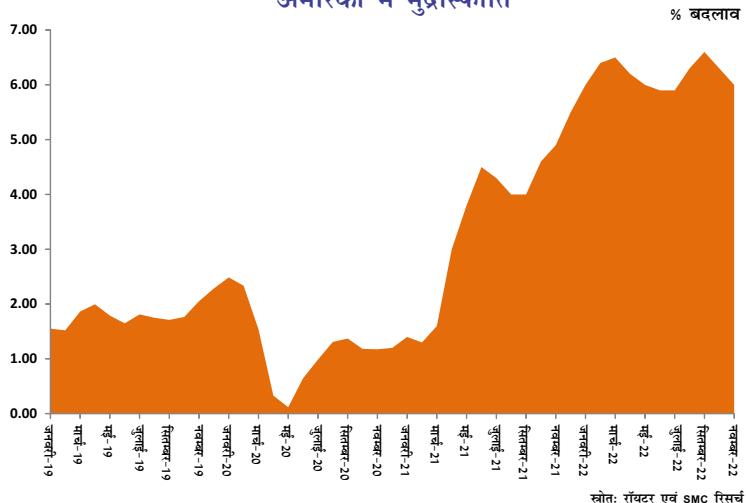


वैश्विक वास्तविक जीडीपी वृद्धि (वार्षिक)

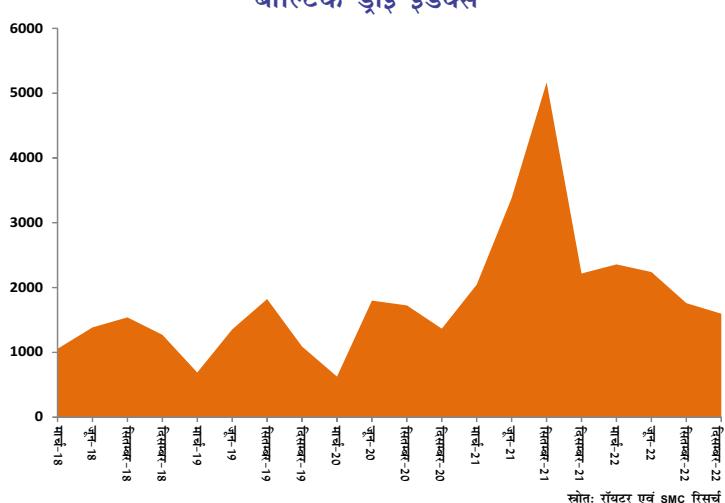


आर्थिक इंडिकेटर

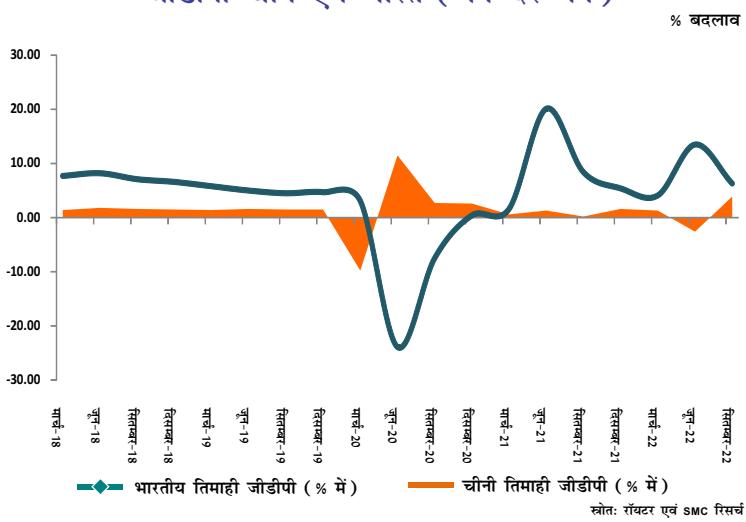
अमेरिका में मुद्रास्फीति



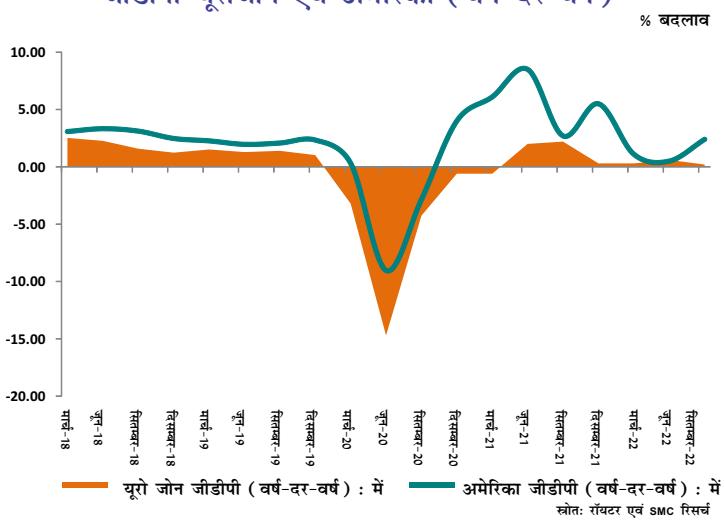
बाल्टिक ड्राइ इंडेक्स



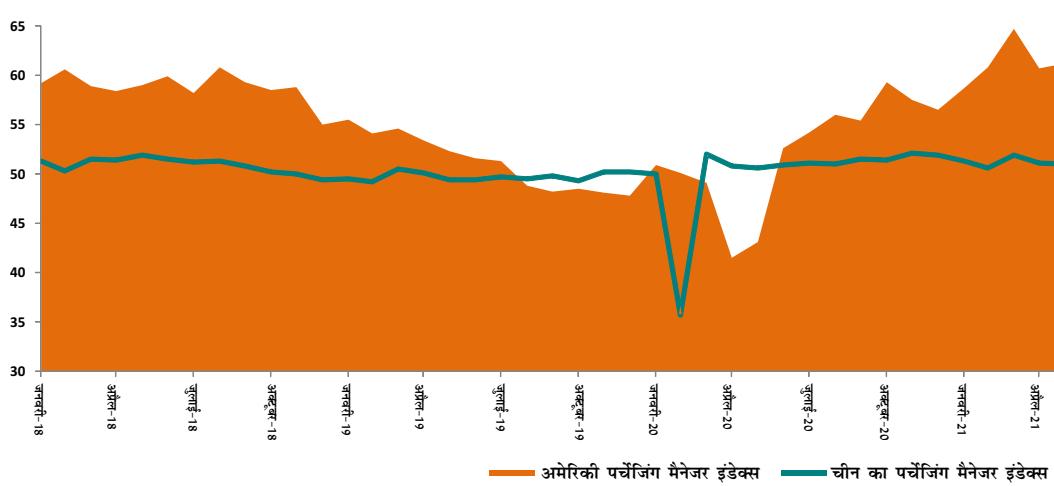
जीडीपी-चीन एवं भारत (वर्ष-दर-वर्ष)



जीडीपी-यूरोजोन एवं अमेरिका (वर्ष-दर-वर्ष)



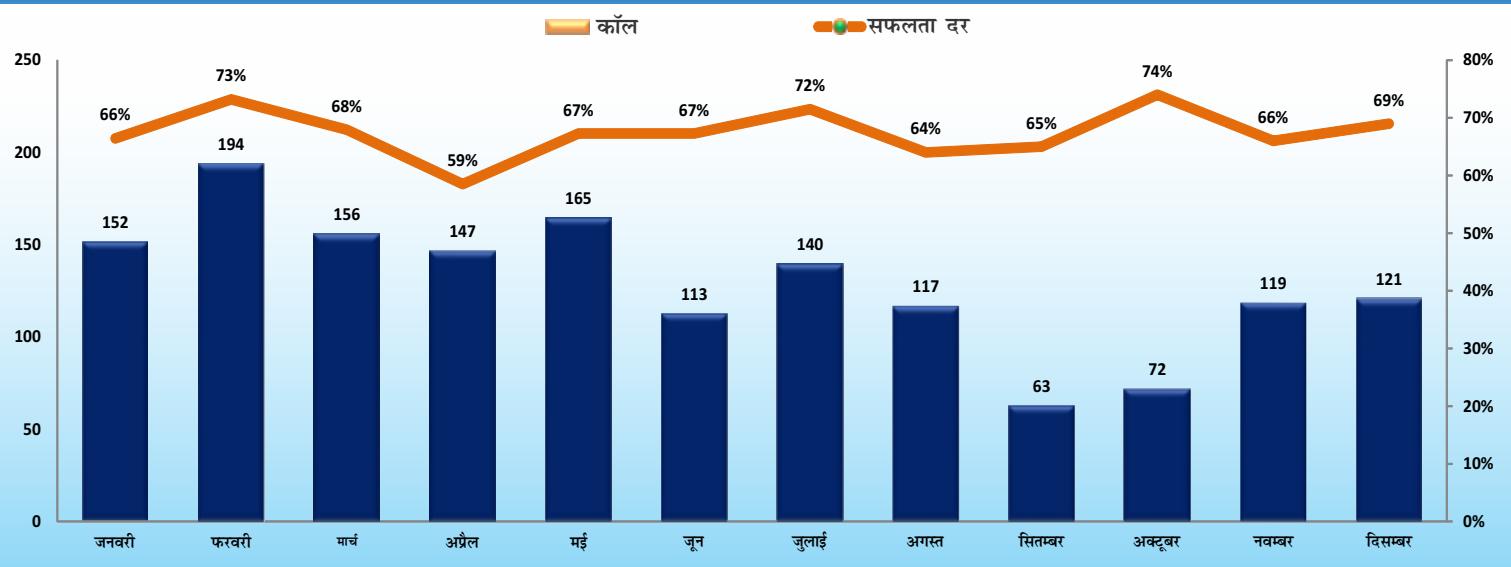
पर्चेजिंग मैनेजर इंडेक्स की तुलना- अमेरिका एवं चीन



कमोडिटी कॉल 2022 का प्रदर्शन



कमोडिटी कॉल 2022 का मासिक प्रदर्शन



स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

कमोडिटी कॉल 2022 का विवरण

माह	कॉल संख्या	मुनाफा वाली कॉल	स्टॉपलॉस कॉल	सफल होने की दर
जनवरी	152	101	51	66%
फरवरी	194	142	52	73%
मार्च	156	106	50	68%
अप्रैल	147	86	61	59%
मई	165	111	54	67%
जून	113	76	37	67%
जुलाई	140	100	40	72%
अगस्त	117	75	42	64%
सितम्बर	63	41	22	65%
अक्टूबर	72	53	19	74%
नवम्बर	119	79	40	66%
दिसम्बर	121	83	38	69%
कुल	1559	1,053.00	506.00	67%

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

सोना

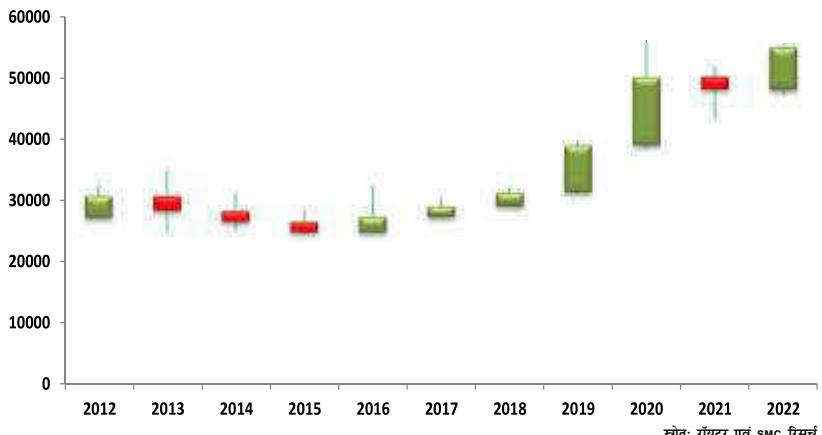
दायरा:

एमसीएक्स : 48000-62000 (रु/10 ग्राम)
कोमेक्स : 1410-2100 (डॉलर/ट्रॉय ऑंस)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- विश्व स्तर पर केंद्रीय बैंकों द्वारा रिकॉर्ड खरीद
- भू-राजनीतिक तनाव
- प्रमुख केंद्रीय बैंकों द्वारा मौद्रिक कार्रवाई
- मुद्रा और बांड की चाल
- भौतिक और निवेश के लिए मांग

सोना वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)



फंडामेंटल

सोने को मुद्रास्फीति के खिलाफ ढाल के रूप में देखा जाता है और निराशाजनक स्थितियों के दौरान गिरावट के बाद रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष और भू-राजनीतिक तनाव के कारण मदी के डर से 2022 में फिर से तेजी शुरू हुई। 2022 की पहली तिमाही में सोने की कीमत 55,558 रु के उच्च स्तर पर पहुंच गई, इसके बाद अधिक बॉन्ड यील्ड और मजबूत डॉलर के कारण सितंबर 2022 के महीने में कीमतें 48972 रु के निचले स्तर पर आ गई। लेकिन केंद्रीय बैंक की ओर से नीतिगत बदलाव की उम्मीद के कारण नवंबर के बाद से फिर से खरीदारी देखी गई। 2022 में डॉलर इंडेक्स 20 साल के उच्च स्तर पर पहुंच गया, और सोने की बढ़त को सीमित किया है। मुद्रास्फीति को रोकने के लिए वैश्विक केंद्रीय बैंकों के आक्रामक रुख के कारण डॉलर इंडेक्स और ट्रेजरी यील्ड में मजबूती दर्ज की गई।

2022 में अब तक सोने की कीमतों में तेजी और गिरावट दोनों दर्ज की गई हैं। आर्थिक और भू-राजनीतिक अनिश्चितता और उच्च मुद्रास्फीति के समय, बैंक स्टोर-वैल्यू के रूप में सोने की ओर रुख करते रिखाई देते हैं। 2022 में केंद्रीय बैंकों ने तीसरी तिमाही तक 673 टन सोने की रिकॉर्ड खरीद की है, जो 1967 के बाद से किसी भी पूरे वर्ष की तुलना में अधिक है, जिससे धातु की वैश्विक मांग बढ़ने में मदद मिली है। बड़े खरीदारों में तुर्की, उज्बेकिस्तान, कतर और भारत के केंद्रीय बैंक थे, लेकिन डब्ल्यूजीसी ने कहा कि अन्य केंद्रीय बैंकों द्वारा भी पर्याप्त मात्रा में सोना खरीदा गया था, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से अपनी खरीद की सूचना नहीं दी है। डब्ल्यूजीसी की रिपोर्ट के अनुसार, ज्वैलरों और सोने के बार एवं सिक्कों के खरीदारों की ओर से भी सोने की मांग मजबूत रही, लेकिन एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स (ईटीएफ) के भंडारण में कमी दर्ज की गई। सोने को आम तौर पर अनिश्चितता या उथल-पुथल के दौर में एक सुरक्षित निवेश संपत्ति के रूप में देखा जाता है, लेकिन कई वित्तीय निवेशकों ने सोने के ईटीएफ में अपनी होलिंग्डग को बेच दिया क्योंकि ब्याज दरों बढ़ीं और अन्य संपत्तियों से होने वाले मुनाफे में बढ़ोतरी हुई। ईटीएफ की बिकावाली से 2022 की तीसरी तिमाही में कॉमेक्स में सोने की कीमतें 8% तक नीचे लुढ़क गई, लेकिन अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रूपये के कमज़ोर होने से एमसीएक्स पर सोने की कीमतों में गिरावट सीमित रही। डब्ल्यूजीसी के अनुसार वैश्विक स्तर पर जुलाई-सितंबर 2022 में सोने की मांग 1,181 टन रही, जो 2021 की समान अवधि के 922 टन से 28% अधिक है।

विश्व बैंक के अध्ययन के अनुसार, मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखने के लिए एक साथ ब्याज दरों में बढ़ोतरी से वैश्विक अर्थव्यवस्थाएं 2023 में मंदी और उभरते बाजारों एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय संकट की ओर बढ़ रही हैं। वैश्विक गतिविधि के आधार पर विश्व स्तर पर विकास के लिए सर्वसमर्पित के पूर्वानुमानों को वर्ष की शुरुआत से ही घटा दिया गया है। 1970 के बाद से, हर वैश्विक मंदी से पहले कई प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में तीव्र धीमापन या पूर्ण मंदी के साथ वैश्विक स्तर पर विकास दर में अहम गिरावट हुई थी। वैश्विक नीतियों के आधार पर कई अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति कई दशकों के उच्च स्तर पर पहुंच गई है। मुद्रास्फीति को नियन्त्रित करने के लिए कई देश भौतिक और राजकोषीय समर्थन वापस ले रहे हैं। नतीजतन, वैश्विक अर्थव्यवस्था पिछले पांच दशकों में मौद्रिक और राजकोषीय नीति को मजबूत करने के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे समकालिक एपिसोड में से एक के बीच में है।

2023 में, सोने की कीमतों में वृद्धि हो सकती है क्योंकि केंद्रीय बैंकों द्वारा दरों में तेजी से और ताबड़तों बढ़ोतरी के कारण आर्थिक वृद्धि के धीमे रहने के संकेत हैं। ग्लोबल पीएमआई, जो अब गिरावट के दायरे में है, भौगोलिक क्षेत्रों में गहरी मंदी का संकेत देता है और अर्थशास्त्री भौतिक मंदी के जोखिम की चेतावनी दे रहे हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि इस वर्ष वैश्विक स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद में केवल 2.7% की वृद्धि होगी। वैश्विक वित्तीय संकट और कोविड को छोड़कर, यह चार दशकों में सबसे धीमी गति होगी और आईएमएफ की वैश्विक मंदी की पिछली परिभाषा-यानी 2.5% से नीचे की वृद्धि- के अनुकूल। विभिन्न झटकों से प्रभावित होने के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था एक ऐसे लचीले स्तर पर है जहां से हम सकारात्मक खबर की उम्मीद कर सकते हैं। कुछ देश अपने विदेशी मुद्रा भंडार के पोंटफोलियो से अमेरिकी डॉलर की मात्रा को कम करना चाहते हैं और विदेशी मुद्रा भंडार में विविधता लाने के तरीकों की तलाश कर रहे हैं क्योंकि वे डॉलर पर निर्भर वैश्विक वित्तीय प्रणाली से बहु-ध्वनीय रिंजर्ब मुद्रा भंडार प्रणाली का अपनाना चाहते हैं। रूस के अधिकारी केवल अमेरिकी डॉलर पर निर्भर रहना नहीं चाहते हैं। रूस ने हाल ही में अमेरिकी ट्रेजरी की अपनी अधिकांश हिस्सेदारी बेच दी है, और बैंक ऑफ रूस ने कहा है कि वह डॉलर से मुक्त होने की नीति जारी रखेगा। युद्ध और भू-राजनीतिक मुद्दे भी प्रीमियम में जुड़ते रहेंगे। अगर रूस और यूक्रेन के बीच शांति स्थापित होती है तो सोने की कीमतों में कुछ गिरावट देखने को मिल सकती है। घरेलू बाजार में, भारतीय रूपये के प्रदर्शन से अधिक अस्थिरता जारी रह सकती है। रूपये के अधिक कमज़ोर होने से अधिक प्रीमियम बढ़ सकता है या इसके विपरीत रूपये के मजबूत होने से कीमतों में गिरावट हो सकती है।

2022 में, एमसीएक्स पर सोने की कीमतों में 13% की वृद्धि हुई जबकि कोमेक्स में सोने में 2% की गिरावट हुई। हमारे विश्लेषण के अनुसार आगे चलकर सोने की कीमतों में तेजी जारी रह सकती है, जहां प्रत्येक गिरावट पर सपोर्ट के पास खरीदारी का अवसर माना जा सकता है और कीमतें 48000-62000 के दायरे में कारोबार कर सकती हैं।

चांदी

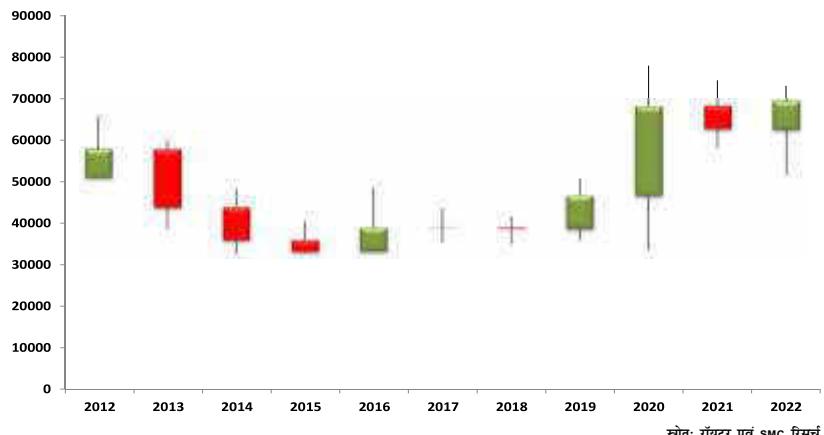
दायरा:

एमसीएक्स : 54000-82000 (रु/किग्रा)
कोमेक्स : 17.00-31.00 (डॉलर/ट्रॉय ऑंस)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- रूस-यूक्रेन संघर्ष
- वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में मंदी का डर
- मुद्रा स्फीति और दर में वृद्धि
- मांग और सप्लाई के अनुमान
- सौर पैनल की मैनुफैक्चरिंग के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक्स में चांदी की औद्योगिक मांग

चांदी वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)



फंडामेंटल

सफेद औद्योगिक धातु चांदी ने 2022 की पहली तिमाही में जबरदस्त उछाल दर्ज की लेकिन तीसरी और चौथी तिमाही में इसमें तेज गिरावट देखी गई और यह दो साल के निचले स्तर पर पहुंच गई। कॉमेक्स पर 2021 में चांदी का कारोबार 22-28 डॉलर के दायरे में हुआ और 2022 में इसकी औसत कीमत नौ साल के उच्चतम स्तर 25.14 डॉलर पर पहुंच गई। एमसीएक्स पर चांदी की कीमतें 51551-73078 के दायरे में रही। कोरोना महामारी के दौरान, चांदी की मांग कुल मिलाकर कमज़ोर रही, लेकिन व्यवसायों की बहाली और 2021 में शुरू हुई आर्थिक रिकवरी के कारण चांदी की मांग में बढ़ोतरी हुई। निवेश के उद्देश्य से भी मांग में बढ़ोतरी हुई।

मांग/आपूर्ति की स्थिति को देखा जाय तो, वैश्विक स्तर पर चांदी की मांग की तुलना में आपूर्ति में कमी रहने का अनुमान है। सिल्वर इंस्टीट्यूट के अनुसार चांदी की वैश्विक मांग 2022 में 16% बढ़कर 1.21 बिलियन ऑंस होने की उम्मीद है, जिसके कारण एक दशकों में सबसे अधिक कमी हो रही है। उद्योग द्वारा आभूषण और चांदी के बर्तन और खुदरा निवेशकों के लिए बार और सिक्कों के लिए चांदी के उपयोग के रिकॉर्ड स्तर तक पहुंचने का अनुमान लगाया गया है। चांदी की मांग प्रमुख तकनीकी परिवर्तनों जैसे ग्रीन टेक्नोलॉजी द्वारा भी संचालित होती है और तकनीकी बदलाव के साथ, पूरे वर्ष उत्पादित वस्तुओं की बढ़ती संख्या के कारण चांदी एक बहुत ही मूल्यवान औद्योगिक लागत के रूप में उभरी है। औद्योगिक मांग के कारण चांदी बाजार में तेजी आ सकती है। औद्योगिक मांग सौर पैनल की मैनुफैक्चरिंग के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक्स में चांदी के कई बढ़ते उपयोगों द्वारा संचालित होती रहेगी, जहां चांदी की एक छोटी सी मांग भी प्रदर्शन के मामले में महत्वपूर्ण अंतर पैदा करती है। वाहन निर्माता चांदी का अधिक उपयोग कर रहे हैं क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक्स वाहनों की मात्रा बढ़ रही है, लेकिन यह क्षेत्र कुल मांग का लगभग 5% ही है। चांदी की मांग में सोलर पैनल की हिस्सेदारी करीब 10 फीसदी है। 2022 में भारत में चांदी की मांग लगभग दोगुनी हो गई क्योंकि खरीदारों ने 2020 और 2021 में कम कीमतों का फायदा उठाया। 2022 में कॉमेक्स एक्सचेंज और लंदन बुलियन मार्केट एसोसिएशन द्वारा निगरानी किए जाने वाले लंदन और न्यूयॉर्क के वाल्टों में जमा चांदी की मात्रा में लगभग 370 मिलियन ऑंस-या 25% की गिरावट हुई है। चांदी के गहने और चांदी के बर्तन की मांग वर्ष 2022 क्रमशः 29% और 72% तक बढ़कर क्रमशः 235 मिलियन ऑंस और 73 मिलियन ऑंस तक होने की संभावना है जो मुख्य रूप से भारतीय मांग में एक अभूतपूर्व उछाल के कारण हुआ है। यह आंशिक रूप से 2021 में स्टॉक की भारी कमी के बाद त्योहारी और शादी के मौसम से पहले भंडार को फिर से जमा करने के कारण हुआ है। दुनिया भर में चांदी का उत्पादन 2021 में लगभग 918 मिलियन ऑंस से बढ़कर 2023 तक एक बिलियन ऑंस से अधिक होने का अनुमान है, जो अनुमानित अवधि के दौरान मैक्सिको, चिली और इक्वाडोर में ज्यादातर प्रमुख परियोजनाओं के परिचालन शुरू होने के कारण हो सकता है।

जहां तक निवेश मांग की बात है, चांदी के ईटीएफ के लिए कमज़ोर निवेश मांग के कारण 2022 के अधिकांश समय में कीमतों पर नीचे की ओर दबाव देखने को मिला है। मेटल्स फोकस के अनुसार वैश्विक स्तर पर ईटीएफ में चांदी की होल्डिंग 110 मिलियन ऑंस तक कम होने की उम्मीद है, जो रिकॉर्ड पर सबसे महत्वपूर्ण वार्षिक निकासी है। फोटोग्राफी को छोड़कर प्रत्येक प्रमुख क्षेत्र की ओर से मांग के नए उच्चतम स्तर पर पहुंचने की संभावना है। चांदी की कीमतों को उच्च मुद्रास्फीति, रूस-यूक्रेन संघर्ष को लेकर निवेशकों के भय, वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में मंदी की संभावना और सरकार में अविश्वास के कारण भी मदद मिल रही है। सिल्वर इंस्टीट्यूट ने 2022 में 194 मिलियन ऑंस चांदी की कमी की भविष्यवाणी की, जो 2021 में 48 मिलियन ऑंस की कमी से अधिक है। चांदी की कीमतों को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा कारक फेडरल रिजर्व की आक्रामक मौद्रिक नीति का रुख है। केंद्रीय बैंक की दर वृद्धि की गति में बदलाव की उम्मीद ने पिछले दो महीनों में चांदी की कीमतों में मदद की ओर चांदी की कीमतें 51551 से 73078 तक 21% से अधिक बढ़ीं।

कुल मिलाकर फंडामेंटल मिला-जुला बना हुआ है क्योंकि मुद्रास्फीति की उम्मीदें सकारात्मक रूप से कीमती धातुओं से संवर्धित होती हैं। वे एक बहुत मजबूत और प्रमुख संकेतक हैं, खास तौर से जब अमेरिकी डॉलर और यूरो प्रभाव के साथ संबंधित होते हैं। 2023 में, चीजें कीमती धातु की ओर स्थानांतरित होती दिखेंगी, क्योंकि मुद्रास्फीति कुछ हद तक नियंत्रित हो रही है। चीन से चांदी की भौतिक मांग में तेजी आने की उम्मीद है क्योंकि कुछ शहरों में कोविड से कुछ राहत मिली है। वर्तमान स्थिति के आधार पर यह उम्मीद है कि वैश्विक स्तर पर केंद्रीय बैंक दर वृद्धि प्रक्रिया को धीमा कर देंगे। फेड ने प्रमुख ब्याज दर को 50 बेसिस प्वाइंट से बढ़ाकर 4.25-4.50% कर दिया है और मुद्रास्फीति को कम करने के लिए ब्याज दर में वृद्धि जारी रखने का संकेत दिया है, जिसके कारण चांदी जैसी धातुओं को कुछ झटके लग सकते हैं।

2023 में आगे, चांदी की कीमतों में गिरावट के बाद खरीदारी की सलाह है और कीमतें 54000-82000 के दायरे में कारोबार कर सकती हैं।

कच्चा तेल

दायरा:

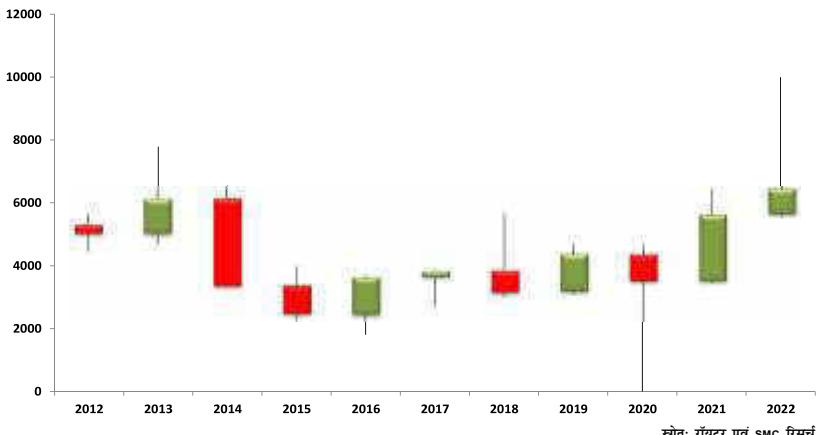
एमसीएक्स : 3800-8000 (रु/बैरल)

नाइमेक्स : 42-110 (डॉलर/बैरल)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- उच्च ब्याज दरें और डॉलर
- ईंधन की मांग में कमी
- चीन में कोविड का प्रकोप
- रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध
- रूसी कच्चे तेल पर यूरोपीय संघ का प्रतिबंध

कच्चा तेल वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)



फंडामेंटल

कच्चे तेल के लिए पिछला वर्ष कई तरह की गतिविधियों से भरपूर था, जहां उच्च स्तर की ओर इसकी तेजतरर चाल ने मुद्रास्फीति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 2022 की पहली तिमाही में कच्चे तेल की कीमतों में आश्चर्यजनक तेजी देखी गई और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण ऊर्जा की आपूर्ति को खतरा पैदा हो जाने से मार्च के महीने में एमसीएक्स पर यह अब तक के उच्च स्तर 9996 रुपये पर पहुंच गई। इसके अलावा रूसी तेल आयात पर अमेरिकी और यूरोपीय प्रतिबंधों के जोखिम और ईरानी तेल को लेकर वार्ता में देरी ने आपूर्ति में भारी कमी होने की आशंकाओं को जन्म दिया। नाइमेक्स पर कीमतें 140 डॉलर से अधिक हो गई, और 2008 के बाद से अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। कीमतों में तेजी के पीछे अन्य मुख्य कारण परिवहन ईंधन की मांग और ओपेक+ की ओर से उत्पादन में कटौती थी। कीमतों में तेजी बनी रही और जुलाई तक 7600-9600 के दायरे में कारोबार जारी रहा क्योंकि ओपेक ने अपना उत्पादन नहीं बढ़ाया। वैश्विक आर्थिक विकास और मांग संबंधी व्यापक चिंताओं के कारण कीमतों में गिरावट हुई, और इसके बाद से कीमतों का प्रदर्शन उठा-पटक बाला रहा है। कीमतों में कमी करने के लिए अमेरिका ने अगले 6 महीनों में अमेरिकी भंडार से 180 मिलियन बैरल जारी करने की घोषणा की। यह अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के सदस्यों द्वारा 240 मिलियन बैरल जारी करने का एक हिस्सा था। चीन की शून्य कोविड नीति ने चीन में तेल की मांग को 30-40% तक कम कर दिया। दुनिया भर में समग्र आर्थिक गतिविधियों में, विशेष रूप से चीन में बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका में, भी गिरावट हुई है। कई देशों में कमज़ोर मैन्युफैक्चरिंग आंकड़ों के कारण मांग में कमी के अनुमान से तेल की कीमतों में गिरावट शुरू हो गई। उच्च ब्याज दरें डॉलर को आकर्षक बनाती हैं, जिससे डॉलर मजबूत हुआ, जिससे अन्य मुद्रा धारकों के लिए डॉलर-मूल्यर्वाची की वस्तुएं अधिक महंगी हो गईं और तेल की कीमतों पर दबाव पड़ा। तब से कच्चे तेल की कीमतों में बिकावाली का मुकाबला करने के लिए ओपेक+ और रूस नवंबर से 2023 के अंत तक अपने लक्षित उत्पादन में प्रति दिन 2 मिलियन बैरल या दुनिया की मांग का लगभग 2% कटौती करने पर सहमत हुए हैं। लेकिन इस कदम से कीमतें नहीं बढ़ीं क्योंकि कटौती केवल कागज पर थी, क्योंकि उत्पादक समूह नियमित रूप से पहले से ही अपने लक्ष्यों से कम उत्पादन कर रहे थे। इस बीच, अमेरिकी उत्पादन बढ़ा और नवम्बर-2022 के अंत में 12.2 मिलियन बैरल/दिन के उच्च स्तर पर पहुंच गया, जो 2020 की कोविड महामारी की पहली लहर के बाद सबसे अधिक है। अमेरिकी आंकड़ों से पता चलता है कि ब्रेंट कच्चे तेल के कॉन्ट्रैक्ट में हेज फंड की शुद्ध लांग पोजिशन पिछले 10 वर्षों में अपने निम्नतम स्तर के करीब है, और लांग पोजिशन और शॉर्ट पोजिशन का अनुपात नवंबर 2020 के बाद से सबसे कम है।

अब मांग/आपूर्ति संतुलन को देखा जाय तो, अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, ऐसी संभावना है कि 2023 में तेल की मांग 1.7 मिलियन बैरल प्रति दिन बढ़ेगी, जो इसके पिछले अनुमान 1.6 मिलियन बैरल प्रति दिन से अधिक है। एजेंसी ने कहा कि यूरोप और एशिया में पेट्रोकेमिकल की कमज़ोर गतिविधि के कारण आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) देशों में मांग अभी भी कम है। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने कहा कि कमज़ोर आर्थिक परिस्थितियों और विश्व स्तर पर तेल की मांग में मंदी के बावजूद तेल की खपत को लेकर हाल के आंकड़ों ने आश्चर्यचकित कर दिया। चीन में व्यवसायों के फिर से खुलने की संभावनाओं के साथ मांग बढ़ने की उम्मीद है। औद्योगिक मांग में वृद्धि जारी है क्योंकि यूरोप में औद्योगिक उपयोगकर्ता नेचुरल गैस से गैसोलीन के उपयोग की ओर जाना जारी रखें हैं जो काफी सस्ता है। ओईसीडी क्षेत्रों में रोजगार और उपभोक्ता खर्च के आंकड़े ठोस थे, जबकि मुद्रास्फीति की संख्या ने संकेत दिया है कि कीमतों का दबाव थोड़ा कम हुआ है, जिससे लचीली दर की उम्मीद बढ़ गई है। तेल की आपूर्ति को देखा जाय तो, ओपेक+ उत्पादन के कम लक्ष्यों के अनुरूप सऊदी और अन्य खाड़ी देशों द्वारा आपूर्ति पर अंकुश लगाने के बाद पांच महीनों में पहली बार नवंबर में विश्व स्तर पर तेल की आपूर्ति कम हो गई। गैर-ओपेक+ देशों में अमेरिका, ब्राजील और उत्तरी सागर में अधिक उत्पादन के कारण वर्ष की शुरुआत से ही 3.1 मिलियन बैरल/दिन अधिक तेल का उत्पादन हुआ है। 2023 में, विश्व स्तर पर तेल आपूर्ति 2022 के 4.7 मिलियन बैरल/दिन की वृद्धि के बाद 770,000 बैरल/दिन बढ़कर 100.8 मिलियन बैरल/दिन होने का अनुमान है।

2023 में आगे बढ़ते हुए, मुख्य ध्यान वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं पर है क्योंकि मंदी की आशंकाएं मांग-आपूर्ति के संतुलन को प्रभावित करती रह सकती हैं। पिछले कुछ महीनों से चीन के विकास को लेकर चिंताएं केंद्र में रही हैं। आईएमएफ ने अनुमान लगाया है कि 2023 में वैश्विक विकास 2.7% तक धीमा हो जाएगा, और अनुमान है कि वर्ष 2023 दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए मंदी जैसा महसूस होगा, जिससे कच्चे तेल की कीमतों पर अधिक दबाव रह सकता है। यह उम्मीद की जाती है कि 2023 की पहली छमाही में वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में गिरावट का सामना करना पड़ सकता है और मांग का अनुमान कम हो सकता है। बाजार इस अनिश्चितता को लेकर भी चिंतित है कि रूसी आपूर्ति पर मूल्य सीमा का कितना प्रभाव पड़ेगा।

कच्चे तेल की कीमतें आपूर्ति और मांग के कारकों और अर्थव्यवस्था की स्थिति के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं। हमारे विश्लेषण के अनुसार कीमतों में भारी उत्तर-चढ़ाव जारी रहेगा और कीमतें 3800-8000 के दायरे में कारोबार कर सकती हैं।

नेचुरल गैस

दायरा:

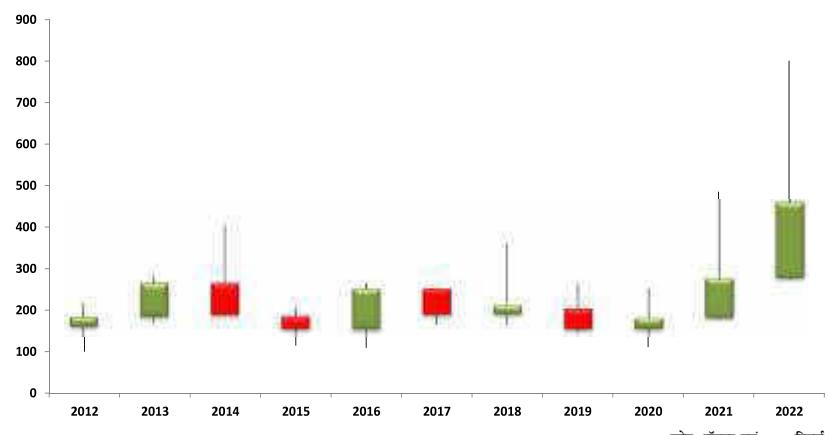
एमसीएक्स : 250-750 (रु/एमएमबीटीयू)

नाइमेक्स : 3.000-8.000 (डॉलर/एमएमबीटीयू)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- मौसम पैटर्न और मौसमी मांग-सप्लाई
- रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध
- गैस भंडार का स्तर
- चीन में कोविड की स्थिति
- मौद्रिक नीतियां

नेचुरल गैस वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)



फंडामेंटल

2022 में नेचुरल गैस का बाजार सबसे मजबूत बाजारों में से एक था, जो अन्य कमोडिटीज के साथ-साथ स्टॉक और बॉन्ड जैसे अधिक पारंपरिक एसेट वर्गों से बेहतर प्रदर्शन कर रहा था। नेचुरल गैस की कीमतें ऐसे स्तर तक पहुंच गईं, जो 2008 के बाद से नहीं देखी गई है और रूस एवं यूक्रेन के बीच संघर्ष के कारण निम्न स्तर से उच्च स्तर तक 189% से अधिक की जबरदस्त उछाल दर्ज की है। लेकिन, अगस्त-2022 के महीने में 801 के उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद कीमतों में गिरावट हुई। 2022 में मांग में अधिकांश वृद्धि रासायनिक क्षेत्र और मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र से हुई। रासायनिक क्षेत्र में कुल 29% गैस खपत होती है, जो औद्योगिक क्षेत्र में सबसे अधिक खपत है। साथ ही, रूस-यूक्रेन संकट के बाद यूरोप और अमेरिका के नेचुरल गैस की कीमतों का अंतर 14 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। यूरोप का नेचुरल गैस संकट रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष एवं ऊर्जा आपूर्ति के लिए रूस पर उनकी अत्यधिक निर्भरता के कारण है। पश्चिमी प्रतिबंधों के जवाब में रूस ने यूरोप को नेचुरल गैस की आपूर्ति घटा दी है। यूरोपीय संघ को नेचुरल गैस की राशनिंग की योजना बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा है, जो एक कठोर कदम है जिससे परिवारों और व्यवसायों को नुकसान होगा। नेचुरल गैस की कीमतें यूरोप में इतनी तेजी से बढ़ी हैं कि इससे पूरी पश्चिमी अर्थव्यवस्था पर मंदी का खतरा मंडरा रहा है। बड़ा मुद्दा यह है कि अमेरिका नेचुरल गैस के भंडार का स्तर ऐतिहासिक औसत से कम है, जिससे बाजार में कम बफर बचा है और कीमतें बढ़ रही हैं। कुल मिलाकर, नेचुरल गैस की तेजी के पीछे तीन प्रमुख उत्प्रेरक हैं: कम उत्पादन, लिकिवाफॉयड नेचुरल गैस का अधिक निर्यात, और भंडारण स्तर, जो 5 साल के औसत स्तर से लगभग 17% नीचे हैं। नेचुरल गैस की आसमान छूती कीमतें अर्थव्यवस्था पर मुद्रास्फीतिक दबाव डालती हैं। कई वर्षों तक नेचुरल गैस अमेरिका में उत्पादन बेसिनों में निरंतर शेल ड्रिलिंग का अपशिष्ट उप-उत्पाद था, जिससे कीमतें असामान्य रूप से कम रहीं। कीमतों में बीच-बीच में बढ़ोतरी भी देखी गई है लेकिन हर बार निचले स्तर पर खरीदारी के कारण कीमतों में सुधार हुआ।

मांग को देखा जाय तो, 2023 में वैश्विक स्तर पर गैस की खपत केवल 0.4% बढ़ने का अनुमान है, लेकिन यह अनुमान विशेष रूप से भविष्य में रूस की कार्रवाइयों और ऊर्जा की निरंतर उच्च कीमतों के आर्धिक प्रभावों को लेकर अनिश्चितता पर अधिक निर्भर है। गैस की उच्च कीमत लंबी अवधि में नेचुरल गैस की संभावनाओं के लिए जोखिम पैदा करती है, प्रमुख रूप से विकासशील बाजारों में, जहां इसका उपयोग मध्यम अवधि में बढ़ने की उम्मीद है क्योंकि इसका उपयोग अन्य उच्च-उत्सर्जन बाले जीवाशम ईंधन के विकल्प के रूप में किया जाता है। 2022 के पहले आठ महीनों में यूरोप में गैस खपत में 2021 की समान अवधि की तुलना में 10% से अधिक की गिरावट हुई है जो कारखानों द्वारा उत्पादन कम किए जाने से औद्योगिक क्षेत्र से मांग में 15% की गिरावट के कारण हुई है। चीन और जापान में मांग अपरिवर्तित बनी हुई है जबकि समान अवधि में भारत और कोरिया में मांग कम हुई है। वर्ष 2022 में चीन की मांग 2% से कम बढ़ने की उम्मीद है, जो 2008 के बाद से सबसे कम वार्षिक वृद्धि है। उत्तरी अमेरिका उन कुछ क्षेत्रों में से एक था जहां बिजली उत्पादन की मांग के कारण मांग में वृद्धि हुई थी।

आपूर्ति पर नजर डालें तो, यह संभावना है कि मौसम से संबंधित मुद्दों के बीच दिसंबर से मार्च तक बाजार में कमी रहेगी, क्योंकि कड़ाके की ठंड के मौसम की स्थिति से उत्पादन में बाधा आएगी। ठंड के मौसम के बाद उम्मीद है कि उत्पादन में लगातार वृद्धि होगी। 2022 में, गैस उत्पादन लुइसियाना और पूर्वी टेक्सास में हेन्सविले क्षेत्र में और पश्चिम टेक्सास और दक्षिणपूर्व न्यू मैक्सिको के पर्मियन क्षेत्र में ड्रिलिंग गतिविधि में वृद्धि के कारण बढ़ा है। इन दोनों क्षेत्रों में हाल ही में पाइपलाइन के बुनियादी ढांचे के विस्तार से उत्पादन में वृद्धि हुई है। ईआईए की रिपोर्ट के अनुसार, यह अनुमान लगाया गया है कि 2023 में उत्पादन थोड़ा बढ़ जाएगा, और औसतन 100 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन और 101 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन के बीच रह सकता है जो 2022 की तुलना में लगभग 2% अधिक है।

2023 में आगे, हमें उम्मीद है कि कीमतें 2022 के सापेक्ष कम रहेंगी क्योंकि उच्च मुद्रास्फीति और मंदी की आशंका से औद्योगिक मांग कमजोर होगी। दुनिया भर में कमजोर आर्थिक विकास से भी मांग कम होगी जिससे कीमतों की बढ़त पर रोक लगी रह सकती है। अमेरिकी गैस की कीमतों के लिए भी आउटलुक कमजोर है क्योंकि अधिक कीमतें उत्पादन को प्रोत्साहित करेंगी, और यह उम्मीद की जाती है कि 2023 में शुष्क गैस का उत्पादन 1.6 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन से थोड़ा अधिक बढ़कर लगभग 99.7 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच सकता है। इस बीच, निर्यात को देखा जाय तो, यद्यपि वर्ष के दौरान अधिक एलएनजी के निर्यात क्षमता शुरू होने वाली है, लेकिन यह काफी कम होगी। हम अगले हीटिंग सीजन से पहले अमेरिकी नेचुरल गैस के भंडार को अपने पांच साल के औसत के नीचे से ऊपर की ओर बढ़ते हुए देख सकते हैं। चीन में कोविड-19 प्रतिबंधों को पूरी तरह से हटाए जाने की उम्मीद नहीं है। उपायों में ढील दी जा सकती है, लेकिन नए शटडाउन का खतरा चीनी व्यापार को लेकर विश्वास और गैस की मांग को कम करेगा।

ट्रेडिंग की संभावना को देखा जाय तो यह 2022 के दौरान काफी अधिक अस्थिरता पर निर्भर थी, जिससे ऑशंस कारोबारियों को पर्याप्त अवसर मिला। हमने एमसीएक्स पर ऑश्यान ट्रेड की मात्रा में रिकॉर्ड वृद्धि देखी है। इस वर्ष भी पिछले वर्ष की तरह अस्थिरता रहने की संभावना है और कीमतें 250-750 के दायरे में कारोबार कर सकती हैं।

एल्युमीनियम

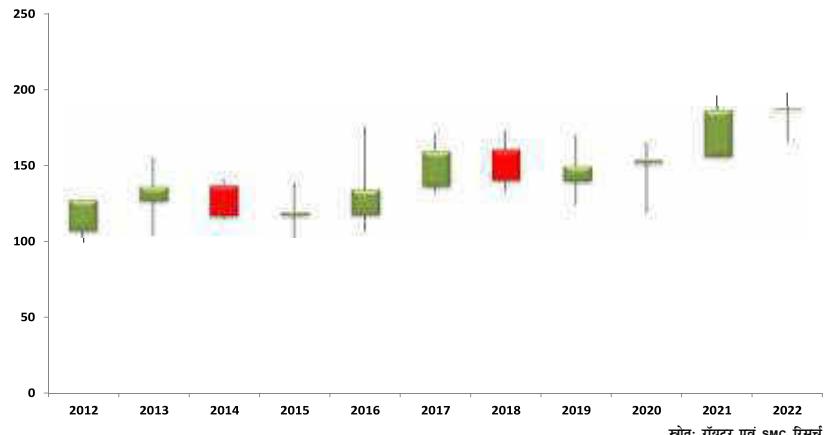
दायरा:

एमसीएक्स : 160-350 (रु./किग्रा)
एलएमई : 1700-3000 (डॉलर/टन)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- यूक्रेन में लंबे समय तक युद्ध और कई भू-राजनीतिक तनाव
- ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि
- उच्च मुद्रास्फीति और मौद्रिक सख्ती
- चीन में सुधार को लेकर अनिश्चितता
- डीकार्बोनाइजेशन नियमों और सख्त पर्यावरण नियमों को अपनाने की कोशिश

एल्युमीनियम बायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)



स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

फंडामेंटल

रूस-यूक्रेन युद्ध, लॉजिस्टिक मुद्दों, मंदी की बढ़ती आशंकाओं और कोविड-19 महामारी के कारण 2022 में एल्युमीनियम की कीमतों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव देखने को मिला। 2022 की पहली तिमाही में, कीमतें मार्च में एलएमई पर 4073.5 डॉलर प्रति टन और एमसीएक्स पर 325.40 डॉलर प्रति टन के अब तक उच्च स्तर पर पहुंच गईं। यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद बढ़ती ऊर्जा लागत ने उत्पादकों के मार्जिन को कम कर दिया, जिससे अधिक ऊर्जा खपत वाली धातुएं विशेष रूप से प्रभावित हुई हैं। वृद्धि के बाद, एल्युमीनियम की कीमत लंदन और एमसीएक्स में 45% से अधिक लुढ़क गई और वर्ष 2022 में लगभग 20% की गिरावट हुई। बाजार में बढ़ती महंगाई, मजबूत अमेरिकी मुद्रा, मंदी की आशंका और चीन में कमजोर मांग को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीय बैंकों के नीतिगत कड़े उपायों का असर बना रहा। चीन में लंबे समय तक कोविड लॉकडाउन और देश की शून्य-कोविड नीति ने मांग को अधिक कमजोर कर दिया। चीन की सरकार ने कार्बन उत्सर्जन को कम करने की योजना के साथ भारी उद्योगों पर प्रतिबंध लगाए है, जिसका असर कीमतों पर पड़ा। चीन में बिजली की लगातार कमी ने भी कमोडिटी की आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित किया है।

2023 की पहली तिमाही में एल्युमीनियम की कीमतों में गिरावट का जोखिम रहने की संभावना है, क्योंकि यूक्रेन में लंबे समय तक युद्ध, ऊर्जा की अधिक कीमतें, गैस की कम उपलब्धता, उच्च मुद्रास्फीति और कमजोर मांग, सभी मंदी की संभावना को बढ़ा रहे हैं। एल्युमीनियम बाजार का ध्यान अमेरिका और यूरोप में बढ़ती बिजली की कीमतों, केंद्रीय बैंकों की मौद्रिक सख्ती और कोविड-19 प्रतिबंधों को लेकर राजनीतिक संकट के कारण चीन में सुधार को लेकर अनिश्चित के कारण मांग के संकट पर केंद्रित हो गया है। नवीनतम विश्व आर्थिक आउटलुक के अनुसार, अमेरिका, यूरोपीय संघ और चीन में वृद्धि के बाधित रहने से वैश्विक अर्थव्यवस्था के लगभग एक-तिहाई हिस्से में इस साल गिरावट होने का जोखिम बना हुआ है। सीआरयू के अनुसार, वैश्विक स्तर पर वृद्धि के कमजोर रहने के अनुमान के कारण 2022 में एल्युमीनियम की मांग के बाधित होने की संभावना है और चीन को छोड़कर दुनिया में प्राथमिक एल्युमीनियम की मांग 0.4% बढ़ने की उम्मीद है। सीआरयू के अनुसार, 2023 में कोई नाटकीय सुधार की उम्मीद नहीं है, क्योंकि कई अर्थव्यवस्थाएं मंदी से जूझ रही हैं, और एल्युमीनियम की मांग वर्ष-दर-वर्ष केवल 1.8% की वृद्धि के साथ 28.9 मिलियन टन होने की उम्मीद है। 2022 में यूरोपीय मांग सबसे अधिक प्रभावित हुई है और 2023 में कमजोर वृद्धि का प्रमुख कारण होने की उम्मीद है। चीन में, शून्य-कोविड नीतियों और लॉकडाउन के कारण 2022 में मांग ठप हो गई है, इसलिए सीआरयू को उम्मीद है कि मांग वर्ष-दर-वर्ष केवल 0.1% बढ़कर 40 मिलियन टन होगी, जबकि निर्माण क्षेत्र में मंदी को देखते हुए 2023 में रिकवरी सुस्त होने की उम्मीद है।

वैश्विक एल्युमीनियम उद्योग को जिन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना होगा उनमें से एक डीकार्बोनाइजेशन है। पर्यावरण के बिंगड़ते मुद्दों और प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए सरकारी कार्रवाई की बढ़ती सार्वजनिक उम्मीदों के कारण, कई देशों की संगठनों द्वारा डीकार्बोनाइजेशन नियमों और सख्त पर्यावरण नियमों को अपनाने के लिए मजबूर किया गया है जो बाजार को नुकसान पहुंचा सकती है। लंबी अवधि में, चीन अपने एल्युमीनियम उद्योग को डीकार्बोनाइज करना जारी रखें हुए हैं और हरित ऊर्जा द्वारा उत्पन्न बिजली की अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रहा है। प्रगलन सुविधाओं के सख्त उत्सर्जन मानकों को पूरा करने के परिणामस्वरूप उत्पाद की कीमतों में वृद्धि हुई है। 2023 के पहले भाग में मैनुफैक्चरिंग उद्योग के लगातार कमजोर होते आउटलुक के कारण मांग में कमी हो सकती है। मैनुफैक्चरों को अपनी बिजली की जरूरतों के लिए कीमत में भारी उछाल का सामना करना पड़ेगा, भले ही निकट अवधि में हाजिर कीमतों में अधिक गिरावट हो या यूरोपीय संघ की सरकारें ऊर्जा की कीमतें नियंत्रित कर दें।

ऊर्जा की बढ़ती कीमतों के कारण अल्कोआ के सैन सिप्रियन स्मेल्टर और स्लोवाकिया में हाइड्रो के संयंत्र सहित प्रमुख यूरोपीय स्मेल्टरों में दिसंबर 2021 से ही उत्पादन कटौती हो रही है। यूरोप में उत्पादन में कटौती कुल क्षमता में से लगभग 1.4 मिलियन टन की हुई है। अमेरिका में, 300,000 टन से अधिक क्षमता की कटौती की गई है, जिसमें अल्कोआ के वारिक और सेंचुरी एल्युमीनियम के हावेसविले संयंत्र शामिल हैं। 2022 के दौरान ऊर्जा की कीमतों को लेकर अनिश्चितता को देखते हुए स्मेल्टरों के बंद होने और उत्पादन में कटौती की अत्यधिक संभावना है। आगे स्मेल्टरों के बंद होने की किसी भी घोषणा से एल्युमीनियम की कीमतें बढ़ सकती हैं लेकिन किसी भी संभावित तेजी के अस्थिर होने की संभावना है। यद्यपि यूरोप और अमेरिका में उत्पादन में कटौती जारी है, लेकिन इंटरनेशनल एल्युमीनियम इंस्टीट्यूट के अनुसार, वैश्विक स्तर पर अक्टूबर तक वार्षिक आधार पर प्राथमिक एल्युमीनियम का उत्पादन 68.9 मिलियन टन हुआ है। आईएआई ने अनुमान लगाया है कि चीन में एल्युमीनियम का अक्टूबर तक वार्षिक उत्पादन 40.9 मिलियन टन होगा। ऊर्जा की कमी के बावजूद चीन का एल्युमीनियम उत्पादन बढ़ा है। कीमतों में अस्थिरता का एक संभावित कारण अमेरिका या यूरोपीय संघ द्वारा रूसी एल्युमीनियम पर पूर्ण प्रतिबंध होगा। ऐसी खबर है कि अमेरिका रूसी एल्युमीनियम के आयात पर प्रभावी प्रतिबंध के रूप में कार्य करेंगे और एल्युमीनियम का उत्पादन करने वाली रूसी रुसल कंपनी को प्रतिबंधित करना।

किसी को उचित कीमत पर खरीददारी के लिए कीमतों में गिरावट का इंतजार करना चाहिए। कीमतों को 160-170 के करीब स्पोर्ट मिल सकता है जबकि उच्च स्तर पर हम 350 की उम्मीद कर सकते हैं। 2023 में बढ़ती मांग के साथ-साथ बढ़ती माल ढुलाई लागत के कारण एल्युमीनियम की कीमतों में तेजी का रुझान बने रहने की संभावना है।

स्टील

दायरा:

एनसीडीईएक्स : 38000-57000 (रु/मी. टन)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- हाल के वर्षों में खपत तेजी से बढ़ी है
- आयात और निर्यात शुल्क पर सरकार का फैसला
- घरेलू और अंतरराष्ट्रीय वृद्धि के अनुमान
- मंदी की आशंका और चीन से सुस्त मांग
- अचल संपत्ति और मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र की ओर से मांग

स्टील वायदा की कीमतों में मासिक बदलाव (NCDEX)



स्रोत: रॉयटर एवं SMC सिस्टम्स

फंडामेंटल

2022 के पहले चार महीनों में स्टील ने 43280 के निचले स्तर से 63100 तक की तेज बढ़त देखी। मई और जून के महीने में, तेज गिरावट देखी गई और शेष वर्ष में, कीमतों में हर वृद्धि से गिरावट देखी गई। अतः वार्षिक आधार पर 5% की मामूली बढ़त के साथ 46000 के करीब बंद हुई। सरकार की बदलती नीतियों और मांग-आपूर्ति कारकों के कारण वर्ष 2022 में भारत में स्टील की कीमतें व्यापक दायरे में कारोबार करती रही है। कोल्ड रोल्ड कॉइल स्टील की कीमतें अप्रैल-22 की शुरुआत में 93000 रु/टन तक बढ़ गई और फिर भारत में स्टील उत्पादों पर निर्यात शुल्क लगाने के साथ कीमतें गिराना शुरू हो गई और नवंबर-22 में 65000 रु/टन के करीब कारोबार कर रही है। भारत सरकार ने वर्ष 2022 में लौह अयस्क के निर्यात पर 50% तक और कुछ इस्पात उत्पादों पर 15% तक शुल्क बढ़ा दिया। इसके साथ ही स्टील उद्योग द्वारा उपयोग किए जाने वाले कोकिंग कोल और फेरोनिकेल सहित कुछ कच्चे माल के आयात पर सीमा शुल्क भी माफ कर दिया। घरेलू उपलब्धता को बढ़ावा देने, मुद्रास्फीति को रोकने के लिए, कोयले की कीमतों को स्थिर करने और इनपुट की अधिक लागतों से जूझ रहे स्टील उत्पादकों के मुद्दों को हल करने के लिए उपाय किए गए। बाद में स्टील की कीमतों में गिरावट हुई और सरकार ने पुनर्जीवित करने के लिए उद्योग की मांग पर निर्यात शुल्क हटा दिया गया। इससे कीमतों को बहु-प्रतीक्षित मदद मिली।

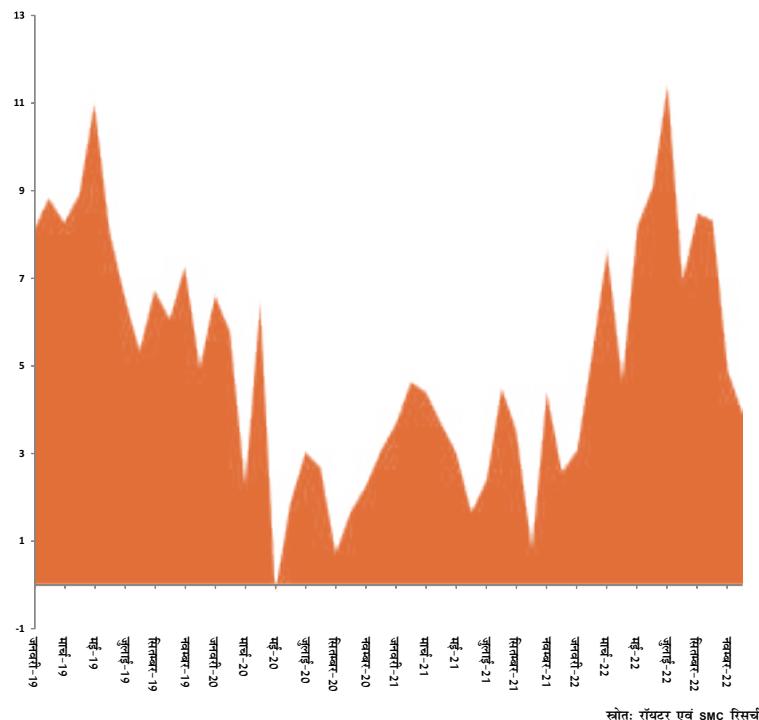
भारत में आर्थिक विकास में इस्पात उद्योग का प्रमुख योगदान रहा है क्योंकि इसका रियल एस्टेट और आवास, बुनियादी ढांचे और निर्माण, ऑटोमोबाइल और उपभोक्ता वस्तुओं जैसे उद्योगों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। दुनिया के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक के रूप में भारत ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में 120 मिलियन टन स्टील का उत्पादन किया है। भारतीय इस्पात क्षेत्र में वृद्धि लौह अयस्क जैसे कच्चे माल की घरेलू उपलब्धता और सस्ते श्रम के कारण हुई है। भारतीय अर्थव्यवस्था में स्टील के विविध उपयोग के साथ, इसका योगदान देश के सकल घरेलू उत्पाद के 2% तक पहुंच गया है। भारत सरकार ने भारतीय इस्पात उद्योग को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के इरादे से राष्ट्रीय इस्पात नीति 2017 को मंजूरी दे दी। राष्ट्रीय इस्पात नीति के तहत भारतीय इस्पात निर्माण क्षमता को 300 मिलियन टन तक बढ़ाया जाएगा। सरकार भारत को मैनुफैक्चरिंग केंद्र बनाने की दृष्टि से बुनियादी ढांचे पर जोर देने और निजी कैपेक्स की योजना लेकर आई है और यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी कि भारत राष्ट्रीय इस्पात नीति के लक्ष्य को हासिल करने में सक्षम है या नहीं। पिछले 7-8 वर्षों में, भारत के इस्पात क्षेत्र में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। 2014-15 से उत्पादन में 1% सीएजीआर की वृद्धि हुई है, जबकि घरेलू स्टील की मांग में लगभग 4% की वृद्धि हुई है। इसी तरह, वर्ष 2022 में जुलाई तक भारत से स्टील निर्यात में 25.1% की वृद्धि हुई। सरकार की महत्वाकांक्षा यह है कि आज से सात वर्ष बाद 2030 तक स्टील उत्पादन क्षमता को आज के 150 मिलियन टन से बढ़ाकर 300 मिलियन टन करना है, हमारे उत्पादन को आज के 120 मिलियन टन से बढ़ाकर लगभग 240 मिलियन टन तक और हमारी प्रति व्यक्ति खपत को 77.8 किलोग्राम से बढ़ाकर लगभग 150 किलोग्राम करना है। यह, निश्चित रूप से, भारत में जबरदस्त मैनुफैक्चरिंग क्षमताओं को बढ़ावा देगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था की कहानी मजबूत है लेकिन साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था की पटकथा इतनी अच्छी नहीं है। कमोडिटी के दिग्गज चीन की कमजोर भागीदारी और ब्याज दर में रिकॉर्ड बढ़ोतरी के बीच मंदी की आशंका विकास की संभावना को कमजोर कर रही है। जीडीपी आंकड़ों में लगातार कमी उच्च स्तर से मांग में गिरावट का संकेत दे रही है। उद्योग संघ वर्ल्डस्टील ने कहा कि 2022 में वैश्विक स्तर पर स्टील की मांग 2.3 फीसदी घटकर 1.79 अरब टन रह जाएगी। महामारी से निरंतर और स्थिर सुधार की उम्मीद को यूक्रेन में युद्ध और बढ़ती मुद्रास्फीति से झटका लगा है। 2022 में चीन द्वारा दिए गए प्रोत्साहनों से 2023 में स्टील की मांग में मामूली वृद्धि होने की संभावना है। लेकिन, कंस्ट्रक्शन क्षेत्र में बढ़ती लगात और बढ़ती ब्याज दरों के कारण कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। चीन की अचल संपत्ति में निवेश 30 वर्षों में सबसे निचले स्तर पर आ गया है और सभी प्रमुख अचल संपत्ति बाजार संकेतक नकारात्मक हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में, विशेष रूप से परिवहन और ऊर्जा उप-क्षेत्रों, निवेश बढ़ाए जाने से इस वर्ष वैश्विक मांग में 1% की वृद्धि होगी। सरकार के पास इंफ्रास्ट्रक्चर ढांचे में व्यय करने के लिए लगभग 10 लाख करोड़ प्रति वर्ष की बहुत ही महत्वाकांक्षा कैपेक्स कार्यक्रम है और यह सड़कों से लेकर राजमार्गों तक, बंदरगाहों से लेकर हवाई अड्डों तक की इमारतों तक, हर क्षेत्र में बहुत अधिक है, जिसके परिणामस्वरूप स्टील की मांग में दोहरे अंकों में वृद्धि हुई है।

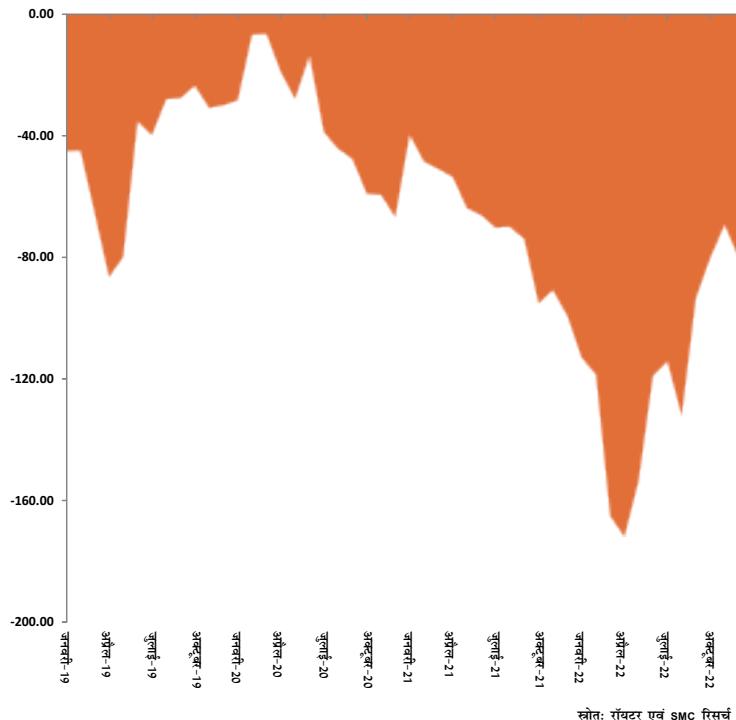
हम जानते हैं कि इस्पात उद्योग एक चक्रीय उद्योग है और यह उत्थान और पतन के चक्रों से गुजरता है। इसलिए, हमें स्टील की कीमतों में एकतरफा तेजी की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, लेकिन इस क्षेत्र में सबसे अहम रूझान केवल तेजी का होगा, और इस प्रकार गिरावट पर खरीदारी करने की आवश्यकता है। यह तेजी के रूझान के साथ 38000-57000 के दायरे में कारोबार कर सकता है।

अनुपात, स्प्रेड एवं रिंग संख्या

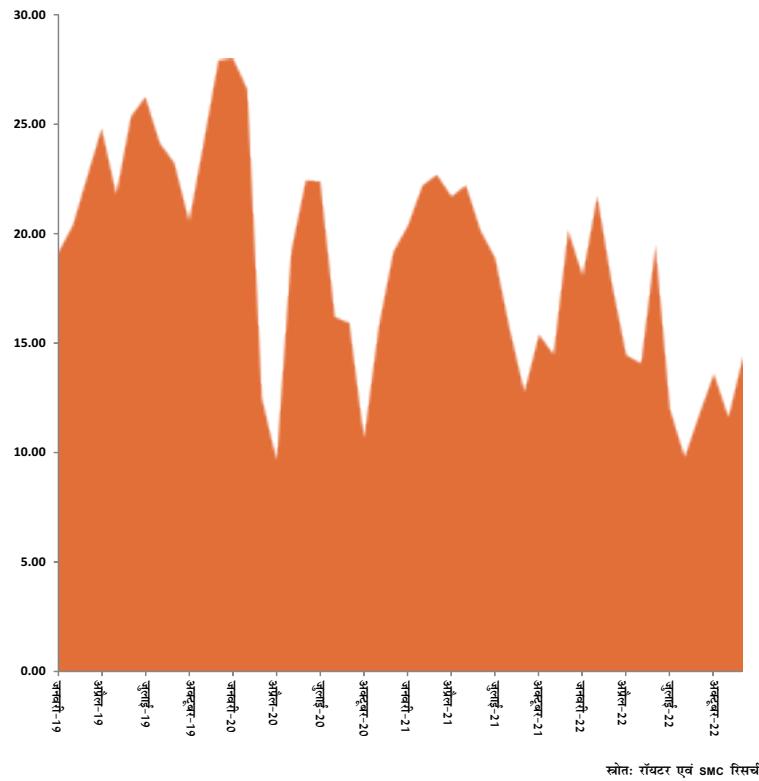
ब्रेंट एवं WTI कच्चे तेल का स्प्रेड (डॉलर में)



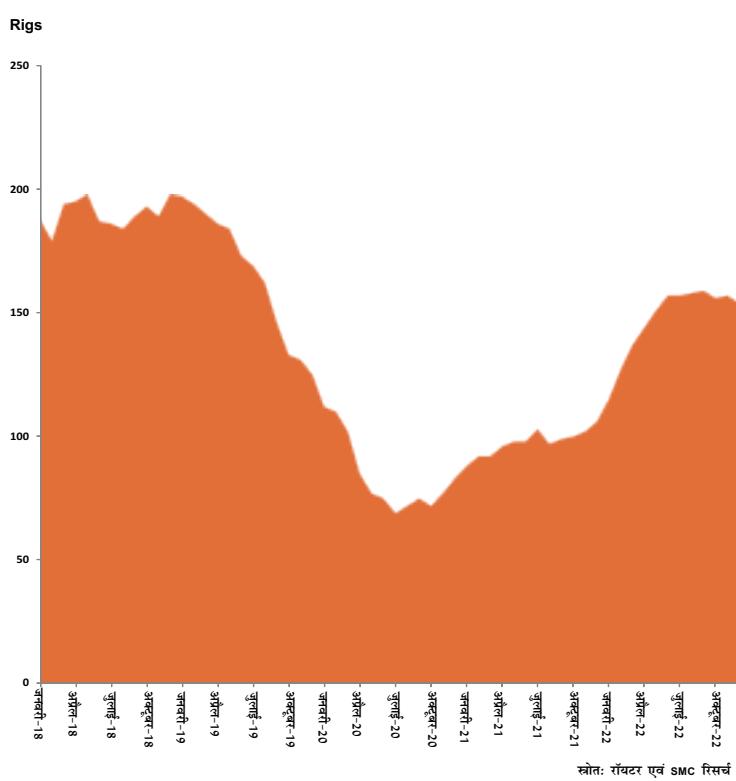
लेड एवं जिंक का स्प्रेड (MCX)



कच्चा तेल एवं नेचुरल गैस का अनुपात (NYMEX)

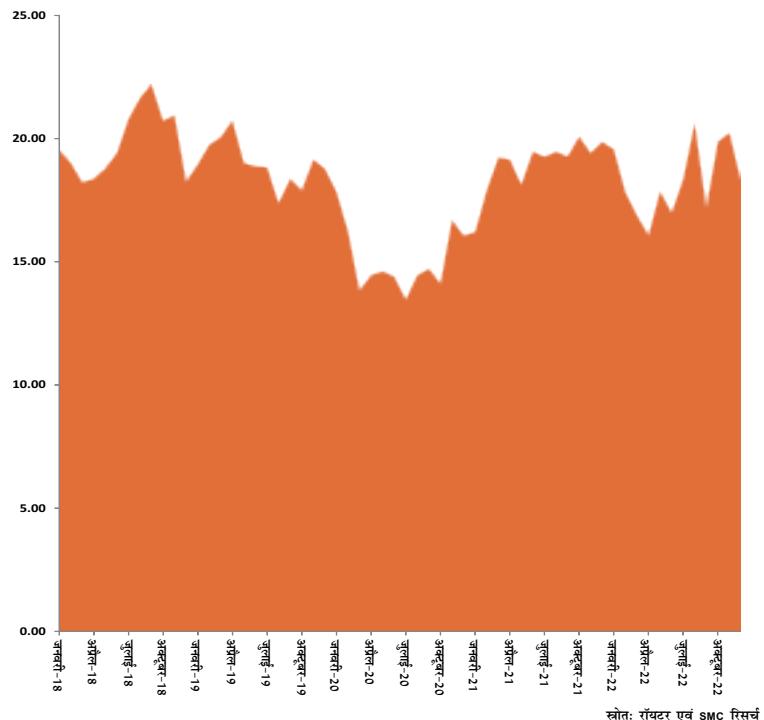


अमेरिकी तेल एवं गैस रिंगों की संख्या

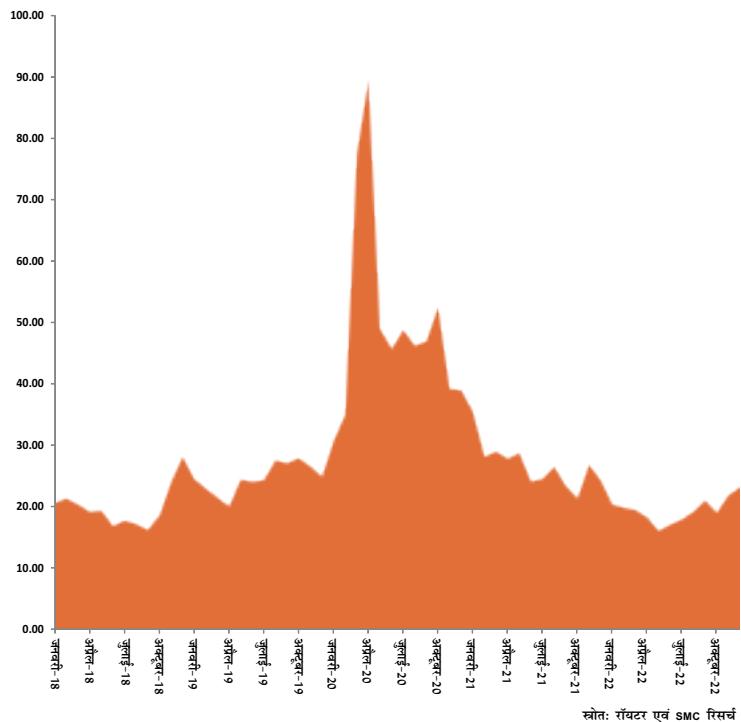


अनुपात

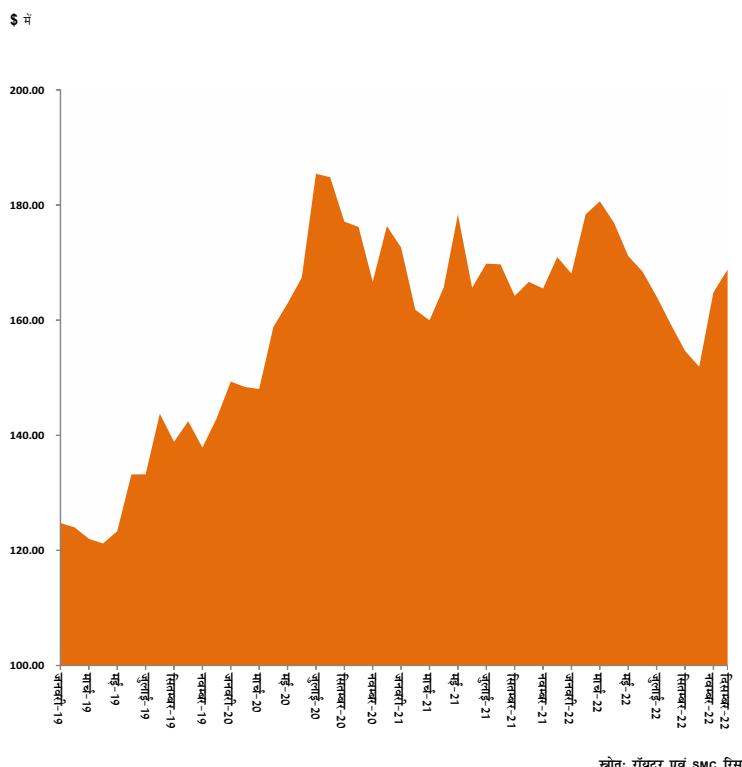
सोना एवं डॉव का अनुपात



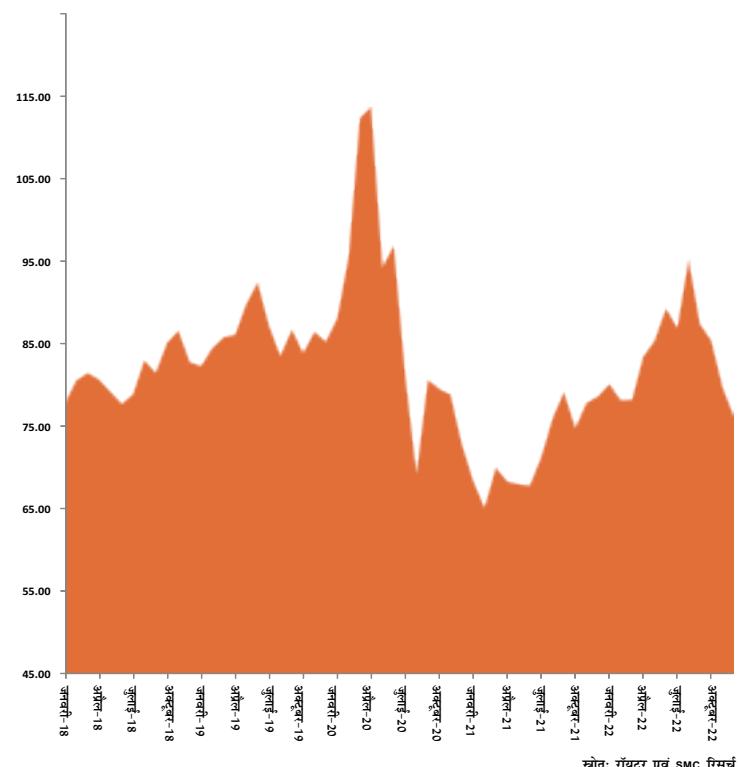
सोना (COMEX) एवं कच्चे तेल (NYMEX) का अनुपात



एसपीडीआर गोल्ड शेयर इंटीएफ (GLD)



सोना एवं चांदी का अनुपात (COMEX)



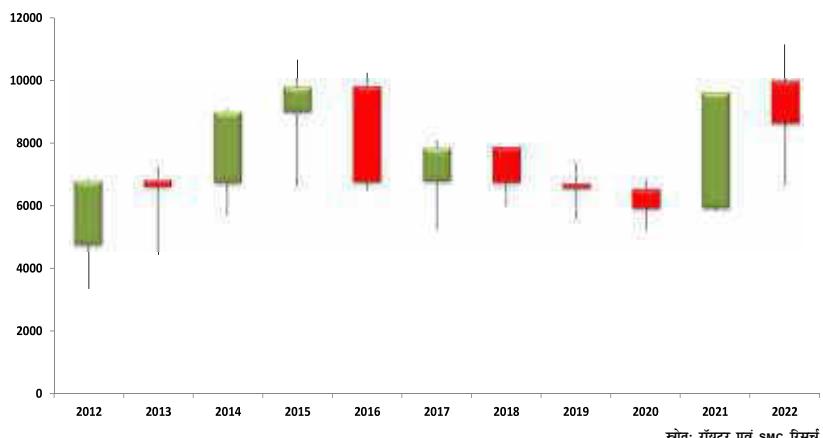
दायरा:

एनसीडीईएक्स : 5700-10600 (रु/किंवटल)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- बांगलादेश और संयुक्त अरब अमीरात से मजबूत निर्यात मांग
- महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में उत्पदन क्षेत्र में गिरावट
- रेस्तराओं के अलावा स्वास्थ्य सेवा उद्योग की ओर से अतिरिक्त मांग
- फसल की प्रगति के दौरान मौसम की स्थिति
- किसानों और स्टॉकिस्टों के पास स्टॉक

हल्दी वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (NCDEX)



फंडामेंटल

हल्दी अपने वाणिज्यिक, पौराणिक और चिकित्सीय महत्व के कारण लंबे समय से भारत का महत्वपूर्ण मसाला रहा है। महामारी के वर्षों के दौरान चिकित्सा क्षेत्र में इसकी मांग में अधिक वृद्धि हुई व्यांकिंग इसका उपयोग बढ़े पैमाने पर कोरोना महामारी के खिलाफ प्रतिरक्षा वर्धक के रूप में किया गया। वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य सेवा उद्योग की ओर से हल्दी की मांग में पिछले कुछ वर्षों में काफी वृद्धि हुई है, जिससे वर्ष 2022 में एनसीडीईएक्स प्लेटफॉर्म पर हल्दी की कीमतें 11148 रुपये/किंवटल के उच्च स्तर तक पहुंच गईं। हल्दी के सबसे बढ़े उत्पादक के रूप में, भारत वैश्विक स्तर पर हल्दी उत्पादन में लगभग 80% योगदान करता है, जिसके बाद चीन, म्यांमार और बांगलादेश का स्थान है। बढ़ती मांग और हल्दी की लागत पर बेहतर कीमत की प्राप्ति ने भारतीय किसानों को बाजार वर्ष 2022-23 में हल्दी के तहत बुआई क्षेत्र में बढ़ोतारी करने के लिए प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन वर्ष-दर-वर्ष 18% बढ़कर 13.30 लाख टन हो गया है। 235 हजार हेक्टेयर के सामान्य क्षेत्र को बहुत पीछे छोड़कर, वर्ष 2022-23 में हल्दी के तहत कुल क्षेत्रफल 349 हजार हेक्टेयर तक बढ़ गया, जो वर्ष-दर-वर्ष 19% अधिक और सामान्य उत्पादन क्षेत्र से 49% अधिक है। कुल आपूर्ति में वर्ष-दर-वर्ष 12% की वृद्धि हुई और यह पांच वर्ष के औसत स्तर की तुलना में अधिक रही, जिससे वर्ष 2022 के अधिकांश समय में हल्दी की कीमतें कम रहीं। मुख्य रूप से आगामी सीजन के लिए उत्पादन की संभावना कम होने के कारण कीमतों में अक्टूबर 22 में कुछ बढ़ोतारी होनी दिखना शुरू हो गई।

आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के किसानों ने अन्य लाभदायक फसलों की ओर रुख किया, जिसके कारण वर्ष 2023-24 के लिए हल्दी के रक्कें में भारी गिरावट हुई। मार्च-23 में हल्दी की नई फसल बाजार में आएगी, जिससे मौसमी रूप से मार्च 23-जून 23 तक कीमतों में गिरावट आएगी। लेकिन, वर्ष 2023-24 के लिए कुल उत्पादन वर्ष-दर-वर्ष 10% घटकर 10.5 लाख टन रहने की उम्मीद है, क्योंकि कम क्षेत्रफल के कारण कुल आपूर्ति पूरे वर्ष सामान्य से कम रहेगी। वर्ष 2022-23 में हल्दी के वार्षिक स्टॉक में वर्ष-दर-वर्ष 45% की गिरावट आने की उम्मीद है, जिससे अधिकतम आवक की अवधि के बाद कीमतों में हर गिरावट पर खरीदारी की गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। महाराष्ट्र भारत में अग्रणी हल्दी उत्पादक राज्य रहा है, जो हल्दी के कुल उत्पादन में लगभग 28% योगदान करता है। महाराष्ट्र ने वर्ष 2022-23 में लगभग 3.68 लाख टन हल्दी का उत्पादन किया है, जो वर्ष-दर-वर्ष 59% अधिक है। निर्यात मांग में बढ़ोतारी के साथ-साथ बेहतर कीमतों की प्राप्ति के कारण महाराष्ट्र में किसानों ने हल्दी की खेती के प्रति अधिक रुचि दिखाई है। पिछले पांच वर्षों में हल्दी के तहत उत्पादन क्षेत्र में 45% की वृद्धि हुई है जिससे महाराष्ट्र में हल्दी के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। लेकिन, रक्कें में गिरावट के कारण वर्ष 2023-24 में महाराष्ट्र में हल्दी का उत्पादन कम होने की उम्मीद है। इसी तरह आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में भी वर्ष 2022-23 में उत्पादन घटने का अनुमान है क्योंकि किसानों ने हल्दी के स्थान पर अन्य लाभदायक फसलों की खेती करना पसंद किया है।

मांग की बात करें, तो हल्दी की वैश्विक मांग ज्यादातर भारत द्वारा पूरी की जाती है और वैश्विक बाजार में हल्दी के निर्यात में 84% योगदान के साथ भारत का एकाधिकार है। अन्य प्रमुख उत्पादक नीदरलैंड और जर्मनी हैं। हल्दी की बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय मांग के कारण पिछले 7 वर्षों में भारत में हल्दी का निर्यात 7% की सीएजीआर के साथ बढ़ा है। भारत ने वर्ष 2020 के 1.53 लाख टन की तुलना में वर्ष 2021 में लगभग 1.84 लाख टन हल्दी का निर्यात किया। वर्ष 2022 में, सितंबर-22 तक कुल निर्यात 1.25 लाख टन हुआ है, जो वर्ष-दर-वर्ष 10% अधिक है। भारत वैश्विक बाजार में कुल उत्पादन का लगभग 12%-15% निर्यात करता है, जहां बांगलादेश भारतीय हल्दी का सबसे अधिक आयातक रहा है, इसके बाद संयुक्त अरब अमीरात (15%), मोरक्को (6%), और संयुक्त राज्य अमेरिका (5%) का स्थान है। वर्ष 2022 में कुल निर्यात मूल्य में बांगलादेश ने लगभग 17% का योगदान दिया। भारतीय हल्दी का प्रमुख निर्यात गंतव्य मध्य और लैटिन अमेरिका के साथ दक्षिण पूर्व एशियाई देश रहे हैं।

मुख्य रूप से आपूर्ति संबंधी चिंताओं के कारण बाजार वर्ष 2023-24 (अप्रैल 23-मार्च 24) में हल्दी की कीमतों में उछाल आने की संभावना है। पिछले वर्ष के भारी कैरीओवर स्टॉक के बावजूद, कुल आपूर्ति में वर्ष-दर-वर्ष 11% की कमी होने की संभावना है, जो मसाला मिलों को कीमतों में हर गिरावट पर अपनी खरीद आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेरित करेगा। पिछले कुछ वर्षों में बढ़ती निर्यात मांग के कारण स्टॉकिस्ट भी सक्रिय रहेंगे, जिससे वर्ष 2023 में ज्यादातर समय हल्दी की कीमतें अधिक रह सकती हैं। हल्दी की अधिक कीमतों से किसानों के चेहरे पर खुशी देखी जा सकती है, जिससे 2023 में हल्दी के रक्कें में वृद्धि होगी और वर्ष 2023 की तीसरी तिमाही के दौरान कीमतों में बढ़त पर रोक लग सकती है।

कीमतों को 5700 के पास अहम सपोर्ट मिलने की संभावना है और कम आपूर्ति के बीच अधिक मांग के कारण इस सीजन में यह 10600 तक पहुंच सकता है।

मेंथा ऑयल

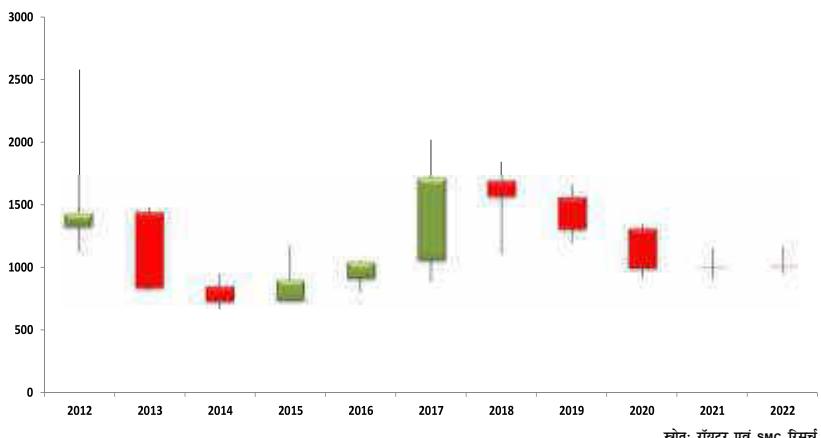
दायरा:

एनसीडीईएक्स : 900-1500 (रु./किग्रा)

ध्यान दिए जाने वाले कारक

- मेंथा का उत्पादन क्षेत्र और उत्पादन
- मेन्थॉल का आयात और निर्यात
- चीन से मांग
- सिंथेटिक मेंथा का आयात
- मौसम की स्थिति और मॉनसून की प्रगति

मेंथा ऑयल वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)



फंडामेंटल

विशेष रूप से चीन से निर्यात मांग में कमी के कारण पिछले कुछ वर्षों में मेंथा तेल की कीमतों में सीमित दायरे में कारोबार हुआ। इस बीच, उद्योगों से कम मांग के साथ ही कोरोना महामारी से भी मेंथा तेल की मांग प्रभावित हुई। चीन के खरीदारों की ओर से सुस्त प्रतिक्रिया के कारण वर्ष 2022 में ज्यादातर मेंथा बाजार प्रभावित हुआ और वर्ष की दूसरी छमाही में अधिकांश समय में कीमतों में नरमी बढ़कर रही। स्टॉकिस्ट और स्टोरिये, जो वर्ष 2022 की पहली तिमाही के दौरान उत्पादन क्षेत्र और उपज में गिरावट की रिपोर्ट पर मेंथा खरीदने में व्यस्त थे, सुस्त निर्यात मांग के कारण दूसरी तिमाही में अपनी पोजिशन को कम करना शुरू कर दिया। अप्रैल-22 में 1152 रु के वार्षिक उच्च स्तर को छूने के बाद, मेंथा तेल की कीमतों में दिसंबर तक 19% की गिरावट हुई। सिंथेटिक मेन्थॉल के बढ़ते आयात ने भी मेंथा तेल को सख्त मांग/आपूर्ति मोड पर रखा। मेंथा तेल का विभिन्न प्रकार की उपभोक्ता वस्तुओं जैसे डिट्जेंट, साबुन, शौचालय उत्पाद, सौंदर्य प्रसाधन, फार्मास्यूटिकल्स, इत्र, कन्फेक्शनरी खाद्य उत्पादों और पेय पदार्थों में उपयोग किया जाता है।

भारत दुनिया में मेंथा तेल का सबसे बड़ा उत्पादक रहा है, जो कुल वैश्विक उत्पादन का लगभग 80% योगदान करता है। कुल उत्पादन में भारत के अलावा चीन लगभग 9%, ब्राजील 7% और संयुक्त राज्य अमेरिका 4% का योगदान होता है। भारत में मेंथा तेल के उत्पादन में पिछले 10 वर्षों में नकारात्मक वृद्धि देखी गई है क्योंकि किसानों ने मेंथा के तहत अपना उत्पादन क्षेत्र कम कर दिया है और उन अधिक आकर्षक फसलों की ओर रुख किया, जिनके लिए सरकार से न्यूनतम मूल्य समर्थन की गारंटी है। उत्तर प्रदेश 75% उत्पादन के साथ भारत में मेंथा तेल उत्पादन का अग्रणी उत्पादक राज्य है और शेष 25% पंजाब, बिहार, मध्य प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि से आता है। भारत में मेंथा की चार श्रेणियां उगाई जाती हैं, अर्थात् जापानी मेंथा / मेन्थॉल मिट, पेरमिट, स्पीयरमिट, बर्गमोट मिट, जिसमें जापानी मिट/मेन्थॉल भारत में सबसे अधिक उगाया जाने वाला मेंथा है, जिसका भारत में कुल मेंथा तेल उत्पादन में 92% हिस्सा है। जापानी मेंथा, मेन्थॉल का प्राथमिक स्रोत है। ताजी पत्तियों में 4-6% तेल होता है। तेल के मुख्य घटक मेन्थॉल (65-75%), मेन्थोन (7-10%) और मेन्थाइल एस्ट्रेट (12-15%) और टेरपेन (पाइपीन, लिमोनेन और कोम्फीन) हैं। भारत में मेंथा का उत्पादन क्षेत्र 55000 हेक्टेयर से 65000 हेक्टेयर तक है। कम उत्पादन क्षेत्र और उपज के कारण वर्ष 2022-23 में मेंथा तेल का उत्पादन काफी कम हो गया। भारत में मेंथा तेल का वार्षिक उत्पादन 35000-38000 टन होता है।

मेंथा की फसल आम तौर पर जनवरी-अप्रैल के दौरान लगाई जाती है और दो बार यानी जून और अक्टूबर महीनों में काटी जाती है। पहली फसल की कटाई विकास के 100-120 दिनों के बाद की जाती है और दूसरी कटाई कटाई के लगभग 80-90 दिनों के बाद की जाती है। उत्तर प्रदेश और बिहार में रबी की बुवाई में देरी को देखते हुए, ऐसा लगता है कि रबी की फसल की कटाई सामान्य से अधिक मौसूली वाली हो जाएगी, जिससे कटाई के दौरान मेंथा की फसल को उच्च तापमान का सामना करना पड़ेगा। मेंथा की फसल के बढ़ते समय 20-40 डिग्री सेल्सियस के बीच औसत तापमान की आवश्यकता होती है और 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान फसल वृद्धि के लिए हानिकारक होता है। उपरोक्त फंडामेंटल को ध्यान में रखते हुए हम उम्मीद करते हैं कि वर्ष 2023 में मेंथा तेल का उत्पादन कम से कम 10% कम होने की संभावना है। मांग के मोर्चे पर, भारत मेंथा ऑयल, मेन्थॉल, मेन्थॉल क्रिस्टल और संबद्ध उत्पादों का प्रमुख निर्यातक रहा है। चीन द्वारा सीमित खरीद के कारण अप्रैल-22-अक्टूबर-22 की समयावधि के दौरान मेन्थॉल और मेन्थॉल क्रिस्टल का निर्यात क्रमशः 25% और 32% कम हो गया है। भारत से मेंथा तेल के प्रमुख निर्यात गंतव्य में चीन, अमेरिका, सिंगापुर, जर्मनी और जापान जैसे देश शामिल हैं। मेंथा तेल के उत्पादन और निर्यात में वृद्धि के साथ, मेंथा तेल की खपत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेजी से बढ़ी है। भारत वार्षिक आधार पर कीरब 16.5 हजार टन और 4 हजार टन मेन्थॉल और मेन्थॉल क्रिस्टल का निर्यात करता है। लेकिन, सिंथेटिक मेन्थॉल की बाजार में हिस्सेदारी हाल के वर्षों में बढ़ रही है और वैश्विक स्तर पर कुल मेन्थॉल बाजार में एक तिहाई हिस्से पर कब्जा जमा चुका है।

वर्ष 2023 में मुख्य रूप से कमज़ोर आपूर्ति की संभावना के कारण मेंथा तेल की कीमतों में उछाल दर्ज करने की संभावना है। वार्षिक उत्पादन में लगातार दो वर्षों में गिरावट के कारण स्टॉकिस्टों और किसानों को बेहतर कीमत की उम्मीद में अपने स्टॉक को बनाए रखने के लिए बढ़ावा मिलेगा। कोरोना महामारी के दौरान अर्थव्यवस्था और औद्योगिक गतिविधियों के बंद होने से प्रभावित हुई मांग में अब अर्थिक स्थिति सामान्य होने के साथ सुधार होने लगा है। मेंथा की घरेलू मांग में, विशेष रूप से डियोडेंट और पान मसाला उद्योग से, वृद्धि देखने को मिल सकती है। हर गुजरते साल के साथ स्वास्थ्य सेवा उद्योग में मांग बढ़ रही है, जिससे इस वर्ष में मेंथा तेल की कीमतों की तेजी को समर्थन मिल सकता है। लेकिन, सिंथेटिक मेन्थॉल के बढ़ते आयात से कीमतों के लिए बड़ा जोखिम होने की संभावना है क्योंकि भारत ने हाल के वर्षों में सिंथेटिक मेन्थॉल के आयात में तेज वृद्धि देखी है।

उपरोक्त फंडामेंटल को ध्यान में रखते हुए मेंथा ऑयल की कीमतों के तेजी के रूझान के साथ 900-1500 के दायरे में कारोबार करने की उम्मीद है।

टेक्निकल कॉर्नर

सोना (एमसीएक्स)

2022 की पहली तिमाही में सोने की कीमतें 13% से अधिक बढ़ीं। इस दौरान कीमतों में तेजी से बढ़ाते हुई और मार्च के महीने में 555558 रु के उच्च स्तर पर पहुंच गई। 2022 की दूसरी और तीसरी तिमाही में कुछ मुनाफाकासूली देखी गई और तिमाही आधार पर 50000-51500 के काफी कम दायरे में स्थिर रही। चौथी तिमाही में, कीमतों ने फिर से गति प्राप्त की और एक तेज उछाल देखी गई और वर्ष के उच्च स्तर पर पहुंच गई लेकिन इस स्तर को तोड़ने में असमर्थ रही। टेक्निकल इंडिकेटर, आरएसआई बढ़त दर्ज कर रहा है और 70 से ऊपर है जो संकेत देता है कि छोटी अवधि में गिरावट संभव है क्योंकि कीमतें अधिक खरीदारी के दायरे में कारोबार कर रही हैं। चार्ट पर त्रिकोण पैटर्न भी देखा गया है, जो यह बताता है कि यदि कीमतें ऊपर की तरफ बढ़ती हैं तो तेजी दर्ज की जा सकती है, जबकि अगर यह नीचे की तरफ टूटती है तो कीमतों में गिरावट होगी। मूँहिंग औसत को देखा जाय तो, यह सापाहिक चार्ट पर 55 और 100 एसएमए से ऊपर कारोबार करता है जो आगे तेजी का रुझान प्रदर्शित करता है।

एमसीएक्स पर, सोने की कीमतों में गिरावट पर 44000 (क्लोजिंग बेसिस) पर रोक लग सकती है और कीमतों को 56000 (क्लोजिंग बेसिस) के आसपास रेजिस्ट्रेंस का सामना करना पड़ सकता है। इस स्तर को पार करने पर 62000 तक बढ़त की संभावना है। अंत में, हम 2023 में कीमतों में गिरावट होने पर 44000 - 46000 के दायरे में खरीदारी करने की सलाह हैं।

चांदी (एमसीएक्स)

एमसीएक्स पर चांदी ने वर्ष 2022 में बढ़त दर्ज किया, लेकिन सोने की तुलना में प्रदर्शन कम रहा। चांदी की कीमतों में 2021 में 8% की गिरावट की तुलना में 10% से अधिक की बढ़त दर्ज की गई। कीमतों में बदलाव को देखा जाय तो 2022 की पहली तिमाही में कीमतें एक वर्ष के उच्च स्तर 73078 पर पहुंच गई लेकिन उसके बाद, लगातार दो तिमाहियों में गिरावट हुई। 2022 की चौथी तिमाही में कीमतों में 20% से अधिक की वृद्धि हुई और निचले स्तर से उच्च स्तर की ओर लगभग 25% की वृद्धि हुई। एमसीएक्स पर चांदी ने मासिक चार्ट पर एक त्रिकोण पैटर्न का गठन किया है। टेक्निकल इंडिकेटर, आरएसआई पिछली तिमाही में पहली बार 50 से ऊपर पहुंच गया है जो तेजी के रुझान का शुरुआती संकेत देता है। सापाहिक चार्ट पर कीमतें 55 और 100 एसएमए से ऊपर बढ़ी हुई हैं, जो तेजी के रुझान को अधिक मजबूत करती हैं। फिबोनाकी अनुमान के आधार पर, कीमतों में 38.2% रिट्रैटमेंट हुआ है और अभी भी 74500 और 79800 (50% और 61.8%) के लक्ष्य तक पहुंच सकती हैं, और 79800 से ऊपर जाने पर कीमतें 85000 तक पहुंच सकती हैं।

एमसीएक्स पर, चांदी की कीमतों में गिरावट पर 51850 (क्लोजिंग बेसिस) के आसपास रोक लग सकती है, जहां 2022 में कीमतों के लिए मजबूत सपोर्ट देखा जा सकता है। अंत में, हम 2023 में कीमतों में गिरावट पर खरीदारी करने की सलाह देते हैं। बढ़त की स्थिति में 79800 से 85000 पर नजर रखी जा सकती है।

बुलडेक्स (एमसीएक्स)

एमसीएक्स पर एमसीएक्स बुलडेक्स वायदा में 2022 के प्रारंभ से लेकर 2022 के अंत तक 8% से अधिक की बढ़त दर्ज की गई है। अप्रैल 2022 के महीने में नरमी के रुझान एनगलिंग पैटर्न देखा गया और उसके बाद कीमत 16,307 से 13,582 तक कम हो गई। दिसंबर-22 में फिर से कीमतों में उछाल आया और 15380 के स्तर पर बंद हुआ। वर्तमान में, कीमतें 13500-16000 के काफी कम दायरे के बीच कारोबार कर रही हैं। सोने और चांदी के लंबी अवधि के चार्ट को हुए, यह उम्मीद की जाती है कि कीमतों में 16000 के रेजिस्ट्रेंस को तोड़ने और तेजी के रुझान की संभावना है। एक अन्य स्थिति यह है कि यदि कीमत 16000 के ऊपर जाने में विफल रहती है और 13,500 के सपोर्ट स्तर से नीचे आ जाती है तो क्रमशः 12000/10500 की ओर गिरावट जारी रह सकती है। मासिक चार्ट में, आरएसआई 56 से ऊपर है, जो अपवार्ड टैजेक्टरी के साथ तेजी के रुझान की ओर संकेत करता है। कुल मिलाकर, टेक्निकल इंडिकेटर 2023 में अधिक अस्थिरता के साथ तेजी के रुझान की ओर संकेत करते हैं।

एमसीएक्स पर कीमतों में गिरावट पर खरीदारी की सलाह है और कीमतें 13500-13000 के दायरे में होंगी। लंबी अवधि के चार्ट पर सोने और चांदी में खरीद की पुष्टि के बाद ही खरीदारी करनी चाहिए। कीमतों में 16000-16500 तक बढ़त दर्ज की जा सकती है।

कीमतों का मासिक चार्ट



कीमतों का मासिक चार्ट



कीमतों का मासिक चार्ट



टेक्निकल कॉर्नर

कच्चे तेल (एमसीएक्स)

कच्चे तेल की कीमतों में 2022 में तेज रिकवरी देखी गई और 2022 की पहली तिमाही में 9996 के नए क्रॉफर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गई। दूसरी तिमाही में कच्चे तेल का कारोबार 7600-9600 के दायरे में हुआ। तीसरी तिमाही में, कीमतों ने अपनी बढ़त का 70% गवां दिया। कीमतों इस वर्ष के उच्च स्तर 9996 रु/बेरल से 34% कम है जबकि इस वर्ष में यह अभी भी 13% अधिक है। कीमतों ने एक चैनल में कारोबार किया और वर्तमान में यह चैनल के निचले बैंड को स्पर्श कर रहा है। कीमतों साप्ताहिक एसएमए 100 से नीचे कारोबार कर रही है लेकिन साप्ताहिक एसएमए 200 स्तर से ऊपर, जिससे पता चलता है कि छोटी अवधि में कच्चे तेल में नरमी का रुझान है। मुख्य रुझान अभी भी तेजी का है, लेकिन 5832 के स्तर से नीचे फिसलने के बाद कीमतों में गिरावट हो सकती है। तेजी के प्रमुख प्रतिक्रियाओं के बिना, कीमतें जब तक 4998 के अगले सपोर्ट स्तर तक पहुंच नहीं जाती हैं तबतक कारोबार से अलग रहना बेहतर है। मासिक चार्ट पर, फिबोनाकी रिट्रैटमेंट के अनुसार कीमतों में ₹9996 से ₹5832 तक गिरावट हुई है जो लगभग 38.2% रिट्रैटमेंट है (1 रुपये के निचले स्तर से ₹9996 तक) और अब क्रमशः ₹4998 और ₹3817 (50% और 61.8%) तक गिरावट हो सकती है।

लघु से मध्यम अवधि के आधार पर नरमी का रुझान अभी भी बरकरार है क्योंकि कीमतों को ₹7800 और ₹10000 के पास मजबूत रेजिस्टेंस हैं। कीमतों में किसी भी वृद्धि को ₹5500 और ₹3800 के सपोर्ट के लिए बिकवाली के अवसर के रूप में देखा जा सकता है। निष्कर्ष में, हम मानते हैं कि 2023 में कीमतों में नरमी का रुझान है।



स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

नेचुरल गैस (एमसीएक्स)

नेचुरल गैस की कीमतों ने वर्ष 2022 की शुरुआत तेजी के रुझान के साथ की और कीमतें 100-360 के बड़े दायरे में 13 वर्ष तक स्थिर रहने के बाद अब तक के उच्च स्तर पर पहुंच गई। वार्षिक चार्ट पर ब्रेकआउट देने के बाद कीमतों में 190% की वृद्धि हुई और अगस्त 2022 के महीने में 801 के उच्च स्तर पर पहुंच गई। तब से, कीमतें कम होने लगीं और उच्च स्तर से 44% लुढ़क गई, लेकिन फिर भी इस वर्ष में अभी भी 60% बढ़त हासिल करने में कामयाब रहीं। वर्तमान में कीमतें 61.8% फिबोनाकी रिट्रैटमेंट स्तर के आसपास सपोर्ट ले रही हैं। साप्ताहिक चार्ट संरचना अभी सकारात्मक दिख रही है क्योंकि कीमतें लंबी अवधि के एसएमए 100 और एसएमए 200 से ऊपर कारोबार कर रही हैं, लेकिन कीमत एसएमए 50 से नीचे फिसल गई है जो ट्रेंड में बदलाव का शुरुआती संकेत है। आरएसआई में गिरावट देखा जा रहा है जो रुझान में नरमी को दर्शाता है। वर्तमान में कीमतों में गिरावट का पैटर्न देखा जा रहा है। फिबोनाकी अनुमानों के आधार पर इसमें बिकवाली का दबाव जारी रखेगा और कीमतों में 260 के स्तर के बाद 155 के स्तर तक गिरावट हो सकती है।

2023 में आगे बढ़ते हुए, हम काउंटर में भारी अस्थिरता देख सकते हैं और संभावित कारोबार 110-710 के दायरे में हो सकता है। हम उच्च स्तर के पास बिकवाली की सलाह दे रहे हैं और क्रमशः 260/155 तक गिरावट हो सकती हैं।



स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

टेक्निकल कॉर्नर

एल्युमीनियम (एमसीएक्स)

एल्युमीनियम की कीमतों में 2022 की पहली तिमाही में तेजी देखी गई है और मार्च के महीने में यह 327.25 के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गई है। 2010 से, कीमतों 110-170 की व्यापक दायरे में कारोबार कर रही थीं। फरवरी 2021 में, कीमतों में तेजी आई है और 119% से अधिक का रिटर्न दिया है। चार्ट पैटर्न के अनुसार, अप्रैल 2022 के महीने में, इसने एक नरमी के रूझान बाला एनगिलिंग पैटर्न बनाया और कीमतों 188.05 के निचले स्तर पर पहुंच गई। वर्तमान में हिस्टोग्राम प्रिंट में हरा रंग और अपवार्ड स्लोपिंग चैनल ट्रैडेक्टरी आगे भी कीमतों में बढ़ोतारी की ओर संकेत करता है। इस बीच, अगर कीमतों को 180 के पास सपोर्ट मिलता है, तो हम फिर से 260-320 के स्तर की ओर तेजी देख सकते हैं। दूसरी ओर, यदि कीमतें इस स्तर से नीचे ढूटती हैं और 180 के स्तर से नीचे बनी रहती हैं, तो यह छोटी से मध्यम अवधि के आधार पर 145/120 की ओर गिरावट दर्ज कर सकती है।

एमसीएक्स पर, एल्युमीनियम की कीमतों में गिरावट पर 125-120 के दायरे में रोक लग सकती है, जहां पहले भी कीमतों को मजबूत सपोर्ट देखा गया है। इस काउंटर के लिए 245/320 के व्यापक लक्ष्य के लिए 150-155 के दायरे में खरीदारी की जा सकती है।

स्टील (एनसीडीईएक्स)

एनसीडीईएक्स पर स्टील बायदा की कीमतों में फरवरी 2021 के निचले स्तर से तेजी का रूझान है और अप्रैल 2022 में उछलकर 63100 के एक नए उच्च स्तर पर पहुंच गई है और निम्न स्तर से उच्च स्तर तक 77% से अधिक का रिटर्न दिया है। मासिक चार्ट पर एक शूटिंग स्टार पैटर्न देखा गया है, जो तेजी के रूझान को पलटकर मंदी के रूझान का संकेत देता है। अप्रैल 2022 के बाद से कीमतें 'लोअर हाई' और 'लोअर लो' के साथ कारोबार कर रही हैं। 57270 का 'लोअर हाई' मंदिरियों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब तक कीमतें इस स्तर से नीचे बनी रहती हैं, तब तक कीमतों में तेजी के बाद बिकवाली जारी रह सकती है। बिकवाली के कारण गिरावट 42000 तक हो सकती है और इसके नीचे 35000/28000 तक लुढ़क सकती है। दूसरी ओर, यदि कीमतें सफलतापूर्वक 57270 के स्तर को पार करती हैं और इस स्तर से ऊपर बनी रहती हैं, तो नरमी का रूझान तेजी में बदल जाएगा, और 'लोअर लो' 42700 प्रमुख सपोर्ट बना रहेगा। मासिक चार्ट में, आरएसआई 57 अंक से ऊपर है, जो ऊपर की ओर उछाल के साथ तेजी के रूझान को अधिक मजबूत करता है। फिबोनाकी अनुमान के अनुसार कीमत 48433 (23.6%) के स्तर पर पहुंच गई है और क्रमशः 52200/55266/58320 (38.2%, 50% और 61.8%) के आगे स्तर तक पहुंचने की प्रतीक्षा है।

एनसीडीईएक्स पर कीमतों में गिरावट पर खरीदारी की सलाह दी जाती है और 52200-65000 के व्यापक लक्ष्य के लिए 42500-43000 के दायरे में खरीदारी की जा सकती है। निवेशकों को 65000 के लक्ष्य के लिए 52200 से ऊपर भी खरीदारी का लाभ लेना चाहिए।

तांबा (एमसीएक्स)

मासिक चार्ट पर, तांबे ने वर्ष 2021 के अंत में एक "हेड एवं शोल्डर" पैटर्न बनाया है और 337.55 से मार्च 2022 में 888.35 तक तेज बढ़त दर्ज की है। फिबोनाकी रिट्रेसमेंट के अनुसार, कीमत 888.35 से 602.15 तक 50% कम हो गई है और वहां इसे मजबूत सपोर्ट मिला है। मौजूदा चार्ट पैटर्न के आधार पर इसे 600 के पास सपोर्ट मिल सकता है। एक अतिरिक्त स्थिति से संकेत मिलता है कि यदि सपोर्ट (600.00) मजबूत रहता है, तो बाजार के पास छोटी से मध्यम अवधि में 888 के रेजिस्टेंस स्तर की ओर तेजी दर्ज करने का अवसर हो सकता है। दूसरी ओर, यदि यह 600 के स्तर से नीचे ढूटती है, तो रूझान तेजी से मंदी की ओर पलट जाएगा और 490/335 के काफी नीचे के सपोर्ट स्तरों तक गिरावट हो सकती है, जो मार्च 2020 से मजबूत सपोर्ट क्षेत्र है।

कुल मिलाकर इसमें तेजी का रूझान नजर आ रहा है। वर्ष 2023 में इस काउंटर में 850/1150 के लक्ष्य के लिए 450-430 के दायरे में खरीदारी का सुझाव है।

कीमतों का मासिक चार्ट



कीमतों का मासिक चार्ट



कीमतों का मासिक चार्ट



टेक्निकल कॉर्नर

जिंक (एमसीएक्स)

एमसीएक्स पर, जिंक की कीमतों ने वर्ष की शुरुआत एक तेज रफ्तार के साथ की और अप्रैल 2022 के महीने में 379.50 के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गई। तब से, इसने “शूटिंग स्टार” पैटर्न बनाया है, जो एक मजबूत बदलाव का पैटर्न है। उसके बाद कीमतें तेजी से नरमी के रूझान में बदल गईं और अक्टूबर 2022 में 249.00 के निचले स्तर पर आ गईं। हमने अप्रैल-2020 से अप्रैल-2022 तक एक जोरदार तेजी देखी है क्योंकि इसमें “वी” पैटर्न देखा गया था। फिरोनाकी रिट्रैटमेंट के अनुसार, कीमत 125.80 से 379.50 के निचले स्तर से 50% रिट्रैटमेंट के साथ 249.0 पर पहुंच गई। छोटी अवधि में 249 स्तरों के आसपास तक्ताल सपोर्ट देखा जा सकता है। यदि यह स्तर टूटता है और कीमतें इस स्तर से नीचे बढ़ती हैं तो 220-185 के स्तर तक गिरावट देखी जा सकती है। प्रमुख रेजिस्टेंस 300-340 के स्तर के पास हैं।

2023 में आगे बढ़ते हुए, जिंक की कीमतों में तेजी के रूझान के साथ कारोबार हो सकता है और 300/380 के लक्ष्य के लिए 255-250 के आसपास खरीदारी की जा सकती है।



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

लेड (एमसीएक्स)

मार्च 2022 में 198.40 के उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद लेड की कीमतों में गिरावट देखी गई। जुलाई 2022 के महीने में एक “हैंगिंग मैन पैटर्न” देखा गया, क्योंकि कीमतें 164.45 के निचले स्तर पर पहुंचने के बाद पलट गईं। तब से कीमतें ऊपर की ओर चल रही थीं। लंबी अवधि के आधार पर, यह हायर हाई और हायर लो के आधार पर कारोबार कर रही है। खरीदारों के लिए 164.45 के करीब हायर लो महत्वपूर्ण बना हुआ है। जब तक कीमतें इस स्तर से ऊपर बढ़ती हैं, तब तक गिरावट पर खरीदारी का अवसर बना रहता है। इस बीच, कीमत अपवार्ड स्लोपिंग चैनल और 21 ईएमए 176.74 के स्तर के पास बढ़ती है। इस बीच, कीमत और आरएसआई के बीच बदलाव ने लेड कीमतों में तेजी को सीमित रखा है। छोटी अवधि में कीमतों को 160-165 के दायरे में अहम सपोर्ट है। इस दायरे से नीचे टूटने पर बिकवाली का दबाव बढ़ सकता है और कीमतें 135-110 के दायरे में कारोबार कर सकती हैं। 198.40 के करीब हाईयर हाई विक्रेताओं के लिए महत्वपूर्ण हैं और यदि कीमतें इस स्तर को पार करने में विफल रहती हैं तो वे 160 स्तर पर वापस आ जाएंगी।

2023 में आगे बढ़ते हुए, एमसीएक्स पर लेड की कीमतें 160-200 के दायरे में कारोबार कर सकती हैं जहां दोनों ओर अवसर हैं। सपोर्ट के पास खरीदारी और रेजिस्टेंस के पास बेचने की सलाह है।



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

कपास (एनसीडीईएक्स)

एनसीडीईएक्स पर कपास ने 2022 में 20% से अधिक का नकारात्मक रिटर्न दिया है और मुख्य रूझान मंदी का हो गया है। कीमतें 21 ईएमए से नीचे फिसल गईं जो बिकवाली का शुरुआती संकेत देती हैं। ऐतिहासिक चार्ट पैटर्न से पता चलता है कि काउंटर गिरावट के पैटर्न में कारोबार कर रहा है और छोटी अवधि के फिरोनाकी स्तर 1400 के पास सपोर्ट ले रहा है। वर्तमान चार्ट संरचना कमज़ोर दिखती है और संकेत देती है कि कीमतों में आगे भी गिरावट आएगी और निकट भविष्य में 50 ईएमए (1400 के स्तर) तक पहुंच जाएगी। यदि कीमतें इस स्तर से सफलतापूर्वक नीचे टूट जाती हैं और 1400 के स्तर से नीचे बढ़ती हैं, तो कीमतें 1260 के स्तर तक और उसके बाद 890 के स्तर तक लुढ़क सकती हैं। एक दूसरी स्थिति से संकेत मिलता है कि यदि कीमतें 1400 के स्तर से नीचे बढ़ती हैं, तो हम ऊपर की ओर 2070 और 2200 तक तेजी देख सकते हैं। टेक्निकल इंडिकेटर आरएसआई भी गिरावट दर्ज कर रहा है जो आगे काउंटर में कमज़ोरी का संकेत देता है। रूझान भी मंदी की तरफ दिख रहा है।

2023 में आगे बढ़ते हुए, नरमी का रूझान बरकरार रहने की संभावना है, और रेजिस्टेंस 2200 के स्तर के पास बिकवाली सही रणनीति होगी और 1400 के लक्ष्य के बाद 890 तक गिरावट हो सकती है।



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

टेक्निकल कॉर्नर

ग्वार समूह (एनसीडीईएक्स)

मासिक चार्ट पर, ग्वारसीड कीमतों ने हायर हाई और हायर लो बनाया है। हायर हाई और हायर लो बनाया है। हायर हाई और हायर लो बनाया है। पैटर्न तेजी का संकेत देते हैं। हायर लो 4517 का स्तर तक तक तेजियों के लिए महत्वपूर्ण है जब तक कीमतें इस स्तर से ऊपर बढ़ी रहती हैं, और यह गिरावट पर खरीदारी वाला बाजार में बना रहता है। 7185 के उच्च स्तर पर काउंटर के लिए प्रमुख रेजिस्टेंस हैं, यदि कीमतें सफलतापूर्वक इस स्तर को पार कर जाती हैं और इस स्तर से ऊपर बढ़ी रहती हैं तो पहले 8520 तक और उसके बाद 9620 तक पहुंच जाएंगी। ऐतिहासिक चार्ट पैटर्न से पता चलता है कि काउंटर 6590 स्तरों के पास मजबूत रेजिस्टेंस का सामना कर रहा है और 4500 के पास सपोर्ट ले रहा है। टेक्निकल इंडिकेटर आरएसआई सपाट चल रहा है और 57.474 पर है जो कम अस्थिरता के साथ तेजी का संकेत देता है। कीमतें भी 50 ईएमए से ऊपर बढ़ी हुई हैं, जो आगे काउंटर में खरीदारी का संकेत देती हैं।

2023 में आगे, कीमतों के बढ़े दायरे में कारोबार करने की संभावना है जहां दोनों ओर की हलचल देखी जा सकती है। 4500 के सपोर्ट के पास खरीदारी और 8520 के रेजिस्टेंस के पास बेचने की सलाह है।

कीमतों का मासिक चार्ट



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

अरंडी (एनसीडीईएक्स)

मासिक चार्ट पर कैस्टरसीड ने बुलिश फ्लैग बनाया है। कीमतों में ऊपर की ओर तेज उछाल के बाद एक अवधि ऐसी होती है, जब कीमत 2 काफी करीब, मोटे तौर पर क्षैतिज रेखाओं के बीच बंधी रहती है। यदि कीमतें इस संरचना के हायर हाई 7724 के ऊपर पार कर जाता है तो यह तेजी वाला पैटर्न खरीदारी की पुष्टि करता है। इस गठन से पहले, हमने चार्ट पर बढ़ते चैनल का पैटर्न को देखा है। कीमत जनवरी 2022 में 6270 के आसपास ब्रेकआउट हुई थी, उसके बाद इसने 7724 का उच्च स्तर बनाया था। अब छोटी अवधि में कीमतों में एक गिरावट संभव है क्योंकि कीमतें अधिक खरीदारी के क्षेत्र के पास कारोबार कर रही हैं। टेक्निकल इंडिकेटर आरएसआई भी गिरावट दर्ज कर रहा है और 61.081 पर है, जिसका अर्थ है कि काउंटर में कमज़ोरी है। एक अन्य स्थिति यह है कि यदि कीमतें 7724 के ऊपर पार करने में विफल रहती हैं और सफलतापूर्वक 6690 के स्तर से नीचे टूट जाती हैं, तो तेजी का रुझान नरमी में बदल जाएगा और कीमतें वापस 5750 पर आ जाएंगी। वर्तमान में कीमतें 50 ईएमए के अहम स्तर से ऊपर बढ़ी हुई हैं, जो आगे चलकर तेजी के रुझान का संकेत करता है।

2023 में कीमतों में तेजी जारी रहेगी, जहां 7500 के लक्ष्य के बाद 8200 के लक्ष्य के लिए 6690 के करीब खरीदारी की सलाह है।

कीमतों का मासिक चार्ट



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

मेंथा ऑयल (एमसीएक्स)

मासिक चार्ट पर मेंथा ऑयल ने सिमेट्रिकल ट्रायंगल पैटर्न बनाया है। इस पैटर्न के आधार पर अगर कीमतें ऊपर की तरफ जाती हैं तो हम काउंटर में खरीदारी देख सकते हैं और अगर नीचे की तरफ टूटती हैं तो बिकावाली होगी। ऐतिहासिक चार्ट पैटर्न के आधार पर, कीमतें 910 पर मजबूत सपोर्ट रहा है। जब तक कीमतें इसके ऊपर बढ़ी रहती हैं, हम तेजी की उम्मीद कर सकते हैं। वर्तमान में कीमतें 50 ईएमए के अहम स्तर 1060 से नीचे बढ़ी हुई हैं। लेकिन मासिक चार्ट पर कैंडल के अंदर एक तेजी का पैटर्न भी देखा जा रहा है, जिसे एक मजबूत 'बुलिश रिवर्सल कैन्डल' माना जाता है। यदि कीमतें 1060 के स्तर को पार कर सफलतापूर्वक 1060 से ऊपर बढ़ी रहती हैं, तो हम सिमेट्रिकल ट्रायंगल पैटर्न पर ब्रेकआउट देख सकते हैं, जिससे कीमतों में उछाल दर्ज की जाती है और जल्द ही कीमतें 1200 और 1480 के स्तर तक पहुंच जाएंगी। वहाँ दूसरी ओर, अगर कीमतें 1060 के ऊपर ब्रेकआउट देने में विफल रहती हैं तो यह 800-1050 के काफी कम दायरे में आगे बढ़ना जारी रख सकती है। टेक्निकल इंडिकेटर आरएसआई बढ़त दर्ज कर रहा है और 47.411 पर है जो तेजी की पुष्टि करता है। कीमतें 2 वर्षों से 970-1170 के व्यापक दायरे में स्थिर रही हैं।

2023 में आगे बढ़ते हुए कीमतों में सकारात्मक बदलाव देखा जा सकता है। 1200 के बाद 1480 के लक्ष्य के लिए 1060 से ऊपर खरीदारी की जा सकती है।

कीमतों का मासिक चार्ट



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

टेक्निकल कॉर्नर

जीरा (एनसीडीईएक्स)

एनसीडीईएक्स जीरा की कीमतों ने तेजी के रुझान वाला एक मेगाफोन का रूप ले लिया है। तेजी के पैटर्न की पुष्टि तब होती है, जब आम तौर पर तीसरे उछाल पर, कीमतें पिछले उच्च स्तर से ऊपर चली जाती हैं तोकिन फिर इस स्तर से नीचे आने में विफल रहती हैं। 30900 के स्तर पर पहुंचते ही चार्ट संरचना लगभग पूरी हो जाएगी। वहां से, 28900 के सपोर्ट की ओर कृष्ण गिरावट देख सकते हैं। यदि कीमतें सफलतापूर्वक 28900 के स्तर से नीचे टूटती हैं और इसके नीचे बनी रहती हैं तो तेजी का रुझान मंदी में बदल जाएगा। कीमतों में फिबोनाकी सपोर्ट स्तर 24400 तक गिरावट के बाद 19000 तक गिरावट देखी जा सकती है। 2022 में कीमतें अपने अब तक के उच्च स्तर पर पहुंच गईं और खुले से बंद होने तक 79% से अधिक की वापसी देखी गई। एक अन्य परिदृश्य इंगित करता है कि यदि कीमतें 28900 के स्तर से नीचे रहने में विफल रहती हैं तो तेजी का रुझान बरकरार रह सकता है और हम 33700 और उसके बाद 42000 तक की तेजी देख सकते हैं। टेक्निकल इंडिकेटर आरएसआई बढ़त के साथ 81.635 पर है जो संकेत करता है कि यह एक अत्यधिक खरीदारी वाले क्षेत्र में कारोबार कर रहा है। इसका मतलब है कि इसकी कीमतों में कृष्ण गिरावट होगी लेकिन कुल मिलाकर रुझान तेजी का है।

2023 में आगे बढ़ते हुए, कीमतों में भारी अस्थिरता देखी जा सकती है, यदि रुझान पूरी तरह से स्पष्ट होता है केवल तभी 24400 के पास खरीदारी की सलाह दी जाती है, और लक्ष्य 33700 का और इसके बाद 42000 का है।

हल्दी (एनसीडीईएक्स)

एनसीडीईएक्स पर हल्दी की कीमतों ने राइजिंग वेज का पैटर्न बनाया है। इस संरचना के आधार पर, यह अनुमान लगाया गया है कि कीमतें मंदी के रुझान के साथ आगे बढ़ सकती हैं। राइजिंग वेज आम तौर पर एक मंदी का संकेत है क्योंकि यह तेजी के दौरान संभावित पलटाव का संकेत देता है। वर्तमान में कीमतों को 10800 के स्तर पर रेजिस्टेंस का सामना करना पड़ रहा है और 6640 के स्तर पर सपोर्ट मिल रहा है। नवंबर 2022 के महीने में कीमतें 50 ईएमए से नीचे टूट गई लेकिन इस स्तर से नीचे बने रहने में विफल रहीं। हमारे विश्लेषण के आधार पर, ऐसी संभावना है कि कीमतों में 9390 के स्तर तक वृद्धि देखी जा सकती है, जो 61.8% फिबोनाकी रिट्रेसमेंट है। वहां से हम फिर से बिकवाली देख सकते हैं और एक बार जब कीमतें सफलतापूर्वक 6500 के स्तर से नीचे आ जाती हैं तो पैटर्न मंदी के रुझान की पुष्टि करता है। एक अन्य स्थिति यह है कि यदि कीमतें 9390 के स्तर से बिकवाली दर्ज करने में विफल रहती हैं, तो हम 11200 तक की तेजी पर बिकवाली करेंगे। टेक्निकल इंडिकेटर आरएसआई 56.274 पर है, जो निकट अवधि में तेजी का संकेत देता है। ऐतिहासिक चार्ट पैटर्न के आधार पर मुख्य रुझान मंदी का दिखाई देता है।

आगे 2023 में, कीमतों में भारी उत्तर-चढ़ाव जारी रह सकता है, और कीमतों में बढ़ोतरी होने पर 10800 के रेजिस्टेंस स्तर के पास बिकवाली की सलाह है जबकि लक्ष्य पहले 6500 का और उसके बाद 5200 का हो सकता है।

धनिया (एनसीडीईएक्स)

एनसीडीईएक्स पर धनिया की कीमतों ने चार्ट पर एक डबल टॉप पैटर्न का गठन किया है। एक डबल टॉप एक अत्यंत मंदी वाला तकनीकी बदलाव का पैटर्न है, जो कीमतों के लगातार दो बार उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद बनता है, जिसमें इन दो उच्च स्तरों के बीच थोड़ी गिरावट होती है। वर्तमान में कीमतें 50 ईएमए से नीचे फिसल गई हैं जो गिरावट का संकेत भी है। 13298 के स्तर पर पहुंचने के बाद कीमतों में लगातार गिरावट देखी गई। वर्तमान पैटर्न के आधार पर, कीमतें मुख्य रुझान को जारी रखने से पहले 9430 के स्तर पर वापस आ जाएंगी। वर्तमान संरचना कमज़ोर लग रही है और कीमतें 7230 की ओर लुढ़क सकती हैं और इसके बाद 5590 तक नीचे जा सकती हैं। एक अन्य स्थिति यह है कि यदि कीमतें 9430 से गिरावट दर्ज करने में विफल रहती हैं, तो 11450 के स्तर तक तेजी दर्ज की जा सकती है। टेक्निकल इंडिकेटर आरएसआई गिरावट दर्ज कर रहा है और 43.735 पर है जो आगे काउंटर में कमज़ोरी का संकेत देता है।

2023 में कीमतों में तेज उत्तर-चढ़ाव जारी रह सकता है, जहां इसे 11450 के करीब रेजिस्टेंस का सामना करना पड़ेगा और संभवतः 5590 के स्तर पर सपोर्ट मिल सकता है। लेकिन मायूली सपोर्ट 7230 के स्तर के पास बना हुआ है।

कीमतों का मासिक चार्ट



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

कीमतों का मासिक चार्ट



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च

कीमतों का मासिक चार्ट



स्रोत: रोयटर एवं SMC रिसर्च



एनसीडीईएक्स सम्मान कार्यक्रम और सेबी के अधिकारियों के साथ भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, नई दिल्ली में



सोपा, इंदौर द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन



एनसीडीईएक्स और एसएमसी द्वारा रायपुर में आयोजित निवेशक जागरूकता कार्यक्रम



एसएमसी दिवस के अवसर पर सेबी के मंच पर भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, नई दिल्ली



विश्व निवेशक सप्ताह 2022
हेड क्वार्टर, दिल्ली



मुरादाबाद, उ.प्र. में
निवेशक जागरूकता कार्यक्रम



भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला
नई दिल्ली

Join for Free 

Commodity Mantra by

Key Takeaways



-  Daily Technical Calls
-  Fundamental Updates with Trend & Levels
-  Daily, Weekly & Monthly Reports
-  Options, Ratio & Spread Calls
-  Regular Webinars

Join Now: <https://t.me/smccommodity>

Broking - Equity, Commodity & Currency | Wealth Management | Insurance Broking | Real Estate Advisory
Mortgage Advisory | Distribution of IPOs, Mutual Funds, FDs & Bonds | Investment Banking
NBFC Financing | PMS | Institutional Broking | Clearing Services | NRI & FPI Services | Research

Visit www.smctradeonline.com

DELHI | MUMBAI | KOLKATA | AHMEDABAD | CHENNAI | BENGALURU | DUBAI

SMC Global Securities Ltd., CIN No. L74999DL1994PLC063609. Registered Office: 11/6-B, Shanti Chamber, Pusa Road, New Delhi 110005 | Tel. +91-11-30111000 | Ext. 8710, 8705

SEBI Reg. No. IN2000199438, Member: NSE (07714), BSE (470), MSE (1002), MCX (8200) & NCDEX (00021). DP SEBI Regn. No. CDSL/NSDL/IN-DP-130-2015.
Mutual Funds Distributor ARN No: 29345. SMC Investments and Advisors Limited, SEBI PMS Regn. No. INP000003435. SMC Insurance Brokers Pvt. Ltd.
IRDAI Regn. No: DB272/04 License No: 289. Valid upto 27/01/2023.

Disclaimer: Investments in securities market are subject to market risks, read all the related documents carefully before investing. PMS is not offered in commodity derivative segment. Insurance is the subject matter of solicitation.